शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 47 वां वर्ष

ई – पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 47 अंक – 46 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2023 सोमवार 07 – 14 नवम्बर 2022 मूल्य पांच रूपए

77.6 % मतदान सत्ता परिवर्तन का स्पष्ट संकेत

नड्डा – जयराम का सिहासन संकट में
कांग्रेस अप्रत्याशित जीत की ओर अग्रसर
पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं का प्रतिशत रहा अधिक
रामपुर में अनाधिकृत वाहन में मिली ईवीएम मशीनें

शिमला/शैल। मतदान का अन्तिम आंकड़ा 77.6% पर पहुंच गया है। इस मतदान में भी पुरुषों की अपेक्षा करीब 4.5% प्रतिशत महिलाओं ने अधिक मतदान किया है। यह अब तक का सबसे अधिक प्रतिशत रहा है और इस तरह के मतदान से हमेशा सत्ता परिवर्तन हुआ है। इसलिये इस बार भी सत्ता का भाजपा के हाथ से निकलना तय माना जा रहा है बल्कि परिवर्तन के लिये एक तरफा मतदान माना जा रहा है।

यह चुनाव भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधी लड़ाई माना जा रहा है। हालांकि आप ने भी 67 सीटों पर चुनाव लड़ा और माकपा के भी 11 उम्मीदवार चुनाव में थे और पिछली बार 1 सीट पर जीत भी हासिल की थी। इनके अतिरिक्त निर्दलीय और अन्य छोटे दलों के भी कुछ उम्मीदवार मैदान में थे। लेकिन राजनीति में राष्ट्रीय परिदृश्य जिस मोड़ पर आ खड़ा हुआ है उसको सामने रखते हुए यही लगता है कि भाजपा और कांग्रेस को छोड़कर अन्य की भूमिका इस चुनाव में ज्यादा प्रभावी नहीं रहेगी।

इस चुनाव में भाजपा ने रिवाज बदलने का नारा दिया था। क्योंकि हिमाचल में अब तक कोई भी मुख्यमंत्री सत्ता में वापसी नहीं कर पाया है। यहां हर पांच वर्ष बाद सत्ता बदलती आयी है। जयराम इस परम्परा को तोड़ने के दावे के साथ चुनाव मैदान में उतरे हैं और विधानसभा के मानसून सत्र के तुरन्त बाद उन्होंने हर चुनाव क्षेत्र का दौरा करके करोड़ों की घोषणाएं और शिलान्यास किये। सरकार की योजनाओं के लाभार्थियों के दर्जनों सम्मेलन आयोजित किये। एक एक कार्यक्रम का मीडिया में इस तरह से प्रचार किया गया कि प्रदेश में जयराम सरकार से पहले शायद कोई विकास हुआ ही नहीं था। बल्कि इन कार्यक्रमों में भाजपा के ही पूर्व मुख्यमन्त्रियों शान्ता कुमार और प्रेम कुमार धूमल की भागीदारी नहीं के बराबर रही। मुख्यमन्त्री के इतने प्रचार प्रयासों के बाद प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने भी एक दर्जन चुनाव रैलियां प्रदेश में संबोधित की हैं। गृह मन्त्री अमित शाह और पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा का योगदान अतिरिक्त रहा है। बल्कि नड्डा तो मतदान के बाद प्रदेश से दिल्ली गये हैं। क्योंकि हिमाचल उनका गृह राज्य है। केन्द्रीय नेतृत्व का जितना घेरा इस चुनाव प्रचार में प्रदेश में रहा है उसके बावजूद यदि प्रदेश भाजपा के हाथ से निकल जाता है जो कि तय माना जा रहा है तो उसके मायने क्या होंगे यह विश्लेषकों के लिए रोचक विषय बना हुआ है।

2017 का चुनाव भाजपा ने प्रेम कुमार धूमल को मुख्यमन्त्री घोषित करके लड़ा था। भाजपा तो यह चुनाव जीत कर सत्ता में आ गई लेकिन धूमल और उनके कुछ विश्वस्त स्वयं चुनाव हार गये। बड़े बाद में कुछ मन्त्रियों के ब्यानों से ही यह सामने आया कि धूमल की हार प्रायोजित थी। धूमल ने इसकी जांच करवाने की गुहार लगाई जिसे राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा ने अस्वीकार कर दिया। बल्कि इसी दौरान धूमल को मानव भारती विश्वविद्यालय प्रकरण में घेरने का प्रयास किया गया। भाजपा के अन्दर का यह विरोधाभास यहीं नहीं रुका बल्कि निर्दलीय विधायक होशियार सिंह और प्रकाश राणा को पार्टी में शामिल करके धूमल के विश्वसतों रविन्द्र रवि और गुलाब सिंह को हाशिये पर धकेलने का सफल प्रयास हुआ। इस पर संगठन के भीतर किस तरह की तनातनी के हालत बने यह पूरा प्रदेश जानता है। हिमाचल में गुजरात और उत्तराखंड की तर्ज पर नेतृत्व परिवर्तन की चर्चायें चली मन्त्रीयों को हटाने और उनके विभाग बदलने की चर्चायें चली। लेकिन यह सब कुछ नड्डा के संरक्षण के चलते चर्चाओं से आगे नहीं बढ़ा। 2017 में जब जयराम मुख्यमन्त्री बने थे तब विधायकों का एक बड़ा वर्ग धूमल को मुख्यमन्त्री बनाने के पक्ष में आ गया था। लेकिन तभी नड्डा भी मुख्यमन्त्री बनने के प्रयासों में आ गये थे। 2017 की यह एक महत्वपूर्ण राजनीतिक गतिविधि रही है और इस ने भाजपा की प्रदेश राजनीति को लगातार प्रभावित किया है।

इस परिदृश्य में जब भाजपा में चुनावी टिकटों के आवंटन का अवसर आया तो मन्त्री महेन्द्र सिंह का टिकट काटकर उनके बेटे को टिकट दे दिया। पूर्व मंत्री स्व. बरागटा के बेटे को उपचुनाव में परिवारवाद के नाम पर टिकट नहीं दिया गया था लेकिन इस बार दे दिया गया। दो मन्त्रीयों सुरेश भारद्वाज और राकेश पठानिया के चुनाव क्षेत्र बदल दिये गये। इस टिकट बांट में भाजपा के अन्दर रोष उभरा और करीब दो दर्जन बागियों ने चुनाव लड़ लिया। प्रधानमन्त्री को कृपाल परमार को फोन करके चुनाव से हटने का आग्रह करना पड़ा और परमार ने यह आग्रह अस्वीकार कर दिया। जगत प्रकाश नड्डा के बिलासपुर सदर में बागी सुभाष शर्मा ने नड्डा से मिलने से ही इन्कार कर दिया। नड्डा बिलासपुर में ही किसी बागी को मना नहीं पाये। अनुराग ठाकुर और महेश्वर सिंह के सार्वजनिक मंच पर आंसू निकल आये। प्रेम कुमार धूमल को एक टीवी साक्षात्कार में स्वीकार करना पड़ा कि बागियों के कारण चुनाव में नुकसान होगा। सरकार की अपनी प्रशासनिक छवि कैसी रही है इसका अन्दाजा इसी से लग जाता है कि पांच वर्षों में मुख्यमन्त्री को सात मुख्यसचिव बदलने पड़े। मुख्यमन्त्री के नाम तय तमगा लगा कि वह सबसे अधिक कर्ज लेने वाले मुख्यमन्त्री जाने जायेंगे।

प्रदेश में दो नगर निगम चुनाव हारने के बाद जब तीन विधानसभा और एक लोकसभा चुनाव जयराम सरकार हार गयी थी तब इस हार के लिये महंगाई और बेरोजगारी को जिम्मेदार ठहराया था। लेकिन तब से लेकर अब तक महंगाई और बेरोजगारी पर नियंत्रण पाने के उपाय करने के बजाय कांग्रेस को तोड़ने की रणनीति पर लग गये। यहां तक ब्यान आ गये कि कांग्रेस चुनाव लड़ने लायक ही नहीं रहेगी। कांग्रेस के आरोपपत्र को रोकने के लिये अपने आरोप पत्र को सीबीआई को सौंपने के ब्यान आ गये। लेकिन अन्त में कांग्रेस अपना आरोप ले आयी। सरकार पर नौकरियां बेचने और खुली लूट के आरोप जनता की अदालत में पहुंचा दिये गये। पुलिस भर्ती में हुआ पेपर लीक एक ऐसा प्रकरण है जो लम्बे समय तक भाजपा का पीछा नहीं छोड़ेगा। ऐसी पृष्ठभूमि के साथ जो भी सरकार चुनाव में उतरेगी वह कैसे सत्ता में वापसी के दावे कर पायेगी यह कोई भी अनुमान लगा सकता है।

दूसरी ओर कांग्रेस ने कर्मचारियों के लिये ओ.पी.एस. बहाली का वायदा करके भाजपा को ऐसे संकट पर लाकर खड़ा कर दिया जहां वह उसकी दस गारन्टियों की कोई काट नहीं कर पायी है। ओ.पी.एस. के समझौता ज्ञापन का दस्तावेज जारी करके भाजपा के उन आरोपों को वही दफन कर दिया जहां वह इसके लिये कांग्रेस पर जिम्मेदारी डाल रही थी। महिलाओं को प्रतिमाह पन्द्रह सौ देने की गारन्टी का परिणाम है की 4.5% महिलाएं पुरुषों से ज्यादा वोट डालने पहुंची है। जिन युवाओं ने प्रधानमन्त्री के धर्मशाला आगमन पर अग्निवीर योजना का भाजपा के बैनर पोस्टर फाड़ कर विरोध प्रदर्शन किया था उन्हें आज कांग्रेस के पांच लाख नौकरियां देने के वायदे पर प्रधानमन्त्री के दो करोड़ नौकरियां और पन्द्रह लाख देने के वायदे पर ज्यादा विश्वास है। कांग्रेस की दस गारन्टीयों से जो हताशा भाजपा को मिली है उसी का परिणाम है कि पार्टी के आईटी सेल को कांग्रेस के प्रभारी राजीव शुक्ला के नाम से एक फर्जी चुनाव सर्वेक्षण जारी करना पड़ा। जिसकी कांग्रेस ने विधिवत शिकायत दर्ज करवाई है। यही नहीं इसी हताशा का परिणाम है कि मतदान के बाद रामपुर में एक अनाधिकृत वाहन में ईवीएम मशीनें पकड़ी गयी। कांग्रेस की शिकायत पर ड्राइवर को गिरफ्तार करके चुनाव कर्मियों को सस्पेंड कर दिया गया है। लेकिन ऐसा हुआ क्यों यह खुलासा होना अभी बाकी है। इस सब से यह अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है कि चुनाव परिणाम क्या रहने वाले है।

शूलिनी विश्वविद्यालय में मानवाधिकारों के लिए सुधारवादी दृष्टिकोण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित किया:राज्यपाल

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि मानवाधिकारों की रक्षा की जिम्मेदारी स्वयं व्यक्ति से शुरू होती है और उसे इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें अपने विचार की प्रक्रिया को बदलने के साथ-साथ दूसरों की स्वतंत्रता के अधिकार की रक्षा करनी चाहिए।

राज्यपाल सोलन जिले के बझोल में शूलिनी विश्वविद्यालय में मानवाधिकारों के लिए सुधारवादी दृष्टिकोण विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन का आयोजन विधि विज्ञान संकाय द्वारा मानवाधिकार आयोग के सहयोग से किया गया।

उन्होंने कहा कि आम आदमी का भी एक परिभाषित जीवन होता है और उनका सम्मान और रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि विधायी सुधार और नियम सम्मानजनक जीवन जीने में भी मदद करते हैं। उन्होंने कहा कि मानवाधिकारों के उल्लंघन के मामले पूरी दुनिया में देखे जाते हैं, जबकि उनकी मानसिकता हम पर उंगली उठाने की रही है। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य हमारी छवि को नुकसान पहुंचाना था। राज्यपाल ने कहा कि धर्म हम सभी में निहित है। हम दूसरों के विचारों और कार्यो का सम्मान करते हैं। दूसरों के विचारों का सम्मान करना हमारा दर्शन है।

उन्होंने कहा कि कानूनी प्रावधानों के बावजूद मानवाधिकार उल्लंघन के मामले सामने आते हैं जबकि यह एक विचार प्रक्रिया है जिसे बदलने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमें पहले एक अच्छा इंसान बनना होगा, जिससे जिंदगी अपने आप बदलने लगती है। उन्होंने युवाओं से अपने विचारों में बदलाव लाने और देश को विकास की दिशा में आगे ले जाने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि युवाओं की सोच ही सकारात्मक बदलाव ला सकती है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर एचपी हैमिल्टन(लंदन) द्वारा प्रकाशित मानवाधिकारों के लिए सुधारात्मक दृष्टिकोण विषय पर एक पुस्तक का भी विमोचन किया।

पंजाब और हरियाणा व उत्तराखंड उच्च न्यायालय के पूर्व कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति राजीव शर्मा ने वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बारे में विस्तृत रूप से बताया। उन्होंने कहा कि हमें दूसरों के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए और अन्याय के खिलाफ लड़ना चाहिए। उन्होंने ग्लोबल वार्मिंग विषय पर भी विचार प्रस्तुत किये।

इससे पूर्व, शूलिनी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. पी. के. खोसला ने राज्यपाल का स्वागत किया और विश्वविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी दी।

औद्योनिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो राजेश्वर चंदेल ने स्वस्थ जीवन जीने के अधिकार के बारे में जानकारी दी और कहा कि यह आज का मुख्य मुद्दा है। उन्होंने स्वस्थ जीवन और प्राकृतिक खेती की संबद्धता के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश निजी विश्वविद्यालय नियामक आयोग के अध्यक्ष मेजर जनरल अतुल कौशिक और मानवाधिकार आयोग के सदस्य अवतार चंद डोगरा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

प्रति कुलपति और ट्रस्टी विशाल आनंद ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर उपायुक्त कृतिका कुल्हारी, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र शर्मा, ट्रस्ट के सदस्य, अधिष्ठता, निदेशक, विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि, छात्र और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

राज्यपाल ने अंतरराष्ट्रीय रेणुका जी मेले के समापन समारोह की अध्यक्षता की

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि रेणुका जी मेला भगवान परशुराम का अपनी माँ रेणुका जी के प्रति श्रद्धा और भक्ति की अभिव्यक्ति है। यह भारतीय समाज के समृद्ध मूल्यों का प्रतीक है। वह सिरमौर जिले में अंतर्राष्ट्रीय रेणुका जी मेले के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

राज्यपाल ने कहा कि मेले और त्यौहार राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के द्योतक हैं और इन्हें हर कीमत पर संरक्षित किया जाना चाहिए। उन्होंने मेले के सफल आयोजन के लिए लोगों को बधाई दी और कहा कि माता रेणुका जी के प्रति अपनी धर्मिक आस्था है तथा प्रदेश और देश के विभिन्न स्थानों से लोग यहां दर्शन करने आते हैं। उन्होंने भगवान परशुराम जी और माता रेणुका जी के मंदिरों में पूजा की और 'देव विदाई' समरोह भी भाग लिया।

इसके उपरांत, राज्यपाल ने पूर्व सैनिक संगड़ाह और स्पोर्ट्स क्लब शिलाई के बीच खेले गए अंतिम कबड्डी मैच को भी देखा जिसे शिलाई टीम ने जीता। उन्होंने मेले के दौरान आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं में विजेता टीमों को पुरस्कार भी प्रदान किए, जिसमें महिला बैडमिंटन प्रतियोगिता में सतौन की कशिश प्रथम उपविजेता रहीं, जबकि स्वाति विजेता रहीं। पुरुष वॉलीबाल में सेन धार प्रथम उपविजेता रहे और ए.के.एम. ददाहू विजेता टीम रही। पुरुष बास्केटबाल प्रतियोगिता में नाहन सीनियर्स प्रथम उपविजेता रही और एम.एम.यू. अंबाला विजेता टीम रही। महिला बैडमिंटन में इकबाल क्लब पांवटा साहिब प्रथम उपविजेता रही और नाहन बालर्स विजेता रही।

उपायुक्त एवं अध्यक्ष रेणुकाजी विकास बोर्ड, राम कुमार गौतम ने राज्यपाल का स्वागत किया और मेले के समापन समारोह की अध्यक्षता करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने मेले में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की भी जानकारी दी। पुलिस अधीक्षक रमन कुमार मीणा, रेणुका विकास बोर्ड के पदाधिकारी, क्षेत्र के गणमान्य लोग एवं जिले के वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

आदर्श,दिव्यांग व महिला कर्मियों द्वारा संचालित मतदान केंद्रों का किया निरीक्षण:डीसी राणा

शिमला/शैल। उपायुक्त एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डीसी राणा ने विधानसभा क्षेत्र चंबा के तहत भूरी सिंह संग्रहालय में दिव्यांग कर्मियों द्वारा संचालित मतदान केंद्र चौगान-1 और आदर्श मतदान केंद्र चौगान-2 (कश्मीरी) का निरीक्षण किया।

इसके उपरांत उपायुक्त ने राजकीय बाल वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला चंबा में महिला कर्मियों द्वारा संचालित मतदान केंद्र सुराड़ा और राजकीय आदर्श कन्या वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला चंबा में भी महिलाओं द्वारा संचालित मतदान केंद्र चौंतडा का भी निरीक्षण कर वहां की गई व्यवस्थाओं का जायजा भी लिया।

इस दौरान उन्होंने संबंधित मतदान केंद्रों के बूथ लेवल अधिकारियों को पोलिंग पार्टियों के अधिकारियों के लिए सभी मूलभूत सुविधाओं को सुनिश्चित करने के लिए भी जरूरी दिशानिर्देश दिए। उन्होंने बताया कि जिला चंबा में 10 मतदान केंद्र महिला कर्मियों द्वारा संचालित किए जा रहे हैं जिसमें प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 2-2 मतदान केंद्र स्थापित किए गए हैं।

इस अवसर पर एसडीएम चंबा अरुण शर्मा, भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रोबेशन अधिकारी इशांत जसवाल, असिस्टेंट प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय चंबा अविनाश मौजूद रहे।

राज्यपाल ने अंतर्राष्ट्रीय लवी मेले का शुभारम्भ किया

शिमला। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने शिमला जिले के रामपुर बुशहर में चार दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय लवी मेले का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि लवी एक व्यावसायिक मेले के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश का सांस्कृतिक उत्सव बन गया है। उन्होंने कहा कि लवी मेले का अपना ऐतिहासिक महत्व है और यह व्यापारिक गतिविधियों के साथ-साथ अपनी समृद्ध पुरानी परंपराओं के लिए भी प्रसिद्ध है।

राज्यपाल ने प्रदेश के लोगों से लवी मेले के साथ-साथ लोकतंत्र के पर्व में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील की। उन्होंने कहा कि वे 12 नवंबर को अपने मताधिकार का प्रयोग करें। प्रत्येक वोट लोकतंत्र को मजबूत करता है, इसलिए सफल लोकतंत्र के लिए अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश अपनी समृद्ध संस्कृति, रीति-रिवाजों और परंपराओं के लिए जाना जाता है। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि लोग सभी धार्मिक और पारंपरिक त्योहारों को बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाते हैं। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और पारंपरिक मेलों और त्योहारों के पुराने गौरव को बनाए रखने के लिए हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए।

उन्होंने लवी मेले की समृद्ध परंपराओं को आगे बढ़ाने के ईमानदार प्रयासों के लिए आयोजकों की सराहना की। उन्होंने कहा कि मेले में प्रदर्शित ऊनी वस्त्र, सूखे मेवे और अन्य पारंपरिक शिल्प और उत्पाद अद्वितीय हैं। मेले में पारंपरिक कारीगरों और किसानों को लाभान्वित करने और उनके प्रचार और बिक्री के लिए बेहतरीन अवसर प्राप्त हुआ है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर किन्नौरी बाजार और विभिन्न संगठनों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का भी शुभारम्भ किया और उनमें गहरी रुचि दिखाई।

उपायुक्त एवं अंतर्राष्ट्रीय लवी मेला आयोजन समिति के अध्यक्ष आदित्य नेगी ने राज्यपाल का स्वागत किया और मेले के दौरान आयोजित की जा रही विभिन्न गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने राज्यपाल को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक डॉ. मोनिका भटुंगुरु और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

शैल समाचार
संपादक मण्डल
संपादक- बलदेव शर्मा
सयुक्त संपादक:जे.पी.भारद्वाज
विधि सलाहकार: ऋचा
अन्य सहयोगी
राजेश ठाकुर
अंजना

इग्नू में यू.जी./पी.जी. कार्यक्रमों के लिए 11 नवम्बर, 2022 तक प्रवेश

शिमला/शैल। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने जुलाई, 2022सत्र के लिए विभिन्न यू.जी./पी.जी. (मास्टर डिग्री/बैचलर डिग्री) तथा डिप्लोमा/पी.जी. डिप्लोमा कार्यक्रमों में प्रवेश (Admission) की अन्तिम तिथि 11 नवम्बर, 2022 तक बढ़ा दी है। युनिवर्सिटी जुलाई 2022 सत्र में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए बी.ए.,बी. कॉम,बी.एस.सी. कार्यक्रमों में नि:शुल्क शिक्षा प्रदान कर रही है। अत: इच्छुक अभ्यर्थी इग्नू की वैबसाईट www.ignou.ac.in.पर अब 11 नवम्बर, 2022 तक अ नलाइन पंजीकरण करवा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए प्रदेश भर में स्थित इग्नू अध्ययन केन्द्रों या इग्नू क्षेत्रिय केन्द्र, शिमला के दूरभाष 0177-2624612 एवं 0177-2624613 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अधिकारियों व कर्मचारियों का राज्य में शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न करवाने के लिये धन्यवाद:संजय कुंडू

शिमला/शैल। 14 अक्तूबर 2022 को चुनाव आयोग द्वारा हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव की घोषणा होते ही प्रदेश में आर्दश चुनाव आचार संहिता लागू हो गई थी। चुनाव आचार संहिता लागू होने के तुरंत बाद प्रदेश में स्वतंत्र निष्पक्ष एवं शातिपूर्वक चुनाव सुनिश्चित करने के लिए भारतीय चुनाव आयोग के निर्देशों के अनुरूप एवं प्रदेश की सुरक्षा की स्थिति को ध्यान में रखते हुए पुलिस विभाग द्वारा कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए थे।

प्रदेश में 232 फ्लाइंग स्क्वाड और 232 स्टेटिक सर्विलांस टीमों का गठन किया गया था। पड़ोसी राज्यों के साथ लगती सीमा पर 108 बैरियरों व एंट्री प्वाइंट्स को सील कर दिया गया था तथा इन सभी स्थानों पर पुलिस बल तैनात किया गया था। इसके अतिरिक्त इन 108 बैरियरों व एंट्री प्वाइंट्स पर सीसीटीवी कैमरे स्थापित किये गये जिनके माध्यम से आने जाने वाले लोगों एवं वाहनों पर निगरानी रखी गई। चुनाव के दौरान शराब की सप्लाई को रोकने के लिए प्रदेश में स्थापित 27 डिस्टलरीज में केंद्रीय पुलिस बलों को तैनात किया गया।

आचार संहिता के दौरान अवैध शराब, नगदी, ड्रग्स व असामाजिक तत्वों को पकड़ने में सहयोग करने के लिए पुलिस महानिदेशक हिमाचल प्रदेश द्वारा पड़ोसी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस प्रमुखों को अर्धशासकीय पत्र लिखकर उनसे एंट्री प्वाइंट्स पर और अधिक पुलिस बल तैनात करके इन एंट्री प्वाइंट्स को पूर्ण रूप से सील करने का आग्रह किया गया था। सीमावर्ती राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों के पुलिस अधिकारियों के साथ समय-समय पर थाना उपमंडल जिला व रेंज स्तर पर समन्वय बैठकों का आयोजन भी किया गया।

विधानसभा चुनाव के लिए इस बार प्रदेश में कुल 7881 पोलिंग बूथ स्थापित किए गए थे। जिनमें 396 क्रिटिकल 886 वयूनिरेबल 6599 आरडीनेरी पोलिंग बूथ थे। इन पोलिंग बूथों में 142 महिला पोलिंग बूथ भी शामिल थे। इन महिला पोलिंग बूथों पर केवल महिला पुलिस कर्मचारियों को ड्यूटी पर तैनात किया गया था।

प्रदेश में शांतिपूर्ण चुनाव सम्पन्न करवाने के लिए गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा केंद्रीय सशस्त्र बलों की 67 कंपनियां राज्य में तैनात की गई थी। जिनमें से 25 कंपनियां 18 अक्तूबर 2022 को तैनात की गई जिन्हें चुनाव से पूर्व बैरियरों व एंट्री प्वाइंटस पर तैनात किया गया था। इसके अतिरिक्त केंद्रीय सशस्त्र बलों की 42 कंपनियां चुनाव से लगभग दो सप्ताह पहले प्रदेश में तैनात हुई थी। जिन्हें विभिन्न प्रकार की चुनाव संबंधी ड्यूटीयों पर तैनात किया गया। इसके अतिरिक्त 2500 गृहरक्षक उत्तराखंड और 1381 गृह रक्षक उत्तर प्रदेश राज्यों से प्रदेश में तैनात किये गये थे। प्रदेश में शांतिपूर्ण चुनाव सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश पुलिस के विभिन्न रैंकों के 11847 पुलिस कर्मचारी व 4500 होमगार्ड भी चुनाव ड्यूटी पर लगाये गये थे।

शांतिपूर्ण एवं स्वतंत्र चुनाव सुनिश्चित करवाने के लिये प्रत्येक क्रिटिकल पोलिंग स्टेशन में केंद्रीय सुरक्षा बलों की तैनाती की गई थी जबकि अन्य पोलिंग बूथों पर हिमाचल पुलिस तथा गृह रक्षकों के जवानों की तैनाती की गई थी। पोलिंग बूथों पर हिमाचल पुलिस के जवानों और हिमाचल गृह रक्षकों को PDISE रेंडमाइजेशन सॉफ्टवेयर के माध्यम से तैनात किया गया था। जिसमें यह सुनिश्चित किया गया कि पुलिस व गृह रक्षकों की ड्यूटी उनके गृह व कार्यकारी चुनाव क्षेत्र में न लगे। इन व्यवस्थाओं से 12 नवम्बर 2022 को प्रदेश भर में स्वतंत्र निष्पक्ष शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न हुये।

मतदान के पश्चात सभी पोलड ईवीएम को राज्य भर के 68 चुनाव क्षेत्रों में स्थापित किये गये स्ट्रांग रूम में सुरक्षित रूप से जमा करवाया जा चुका है। स्ट्रांग रूम की सुरक्षा हेतु थ्री टायर सिक्योरिटी सिस्टम लगाया गया है जिसे इन्नर मिडल वह आउटर कॉर्डन में बांटा गया है।

चुनावों की घोषणा से चुनाव के संपन्न होने तक प्रदेश पुलिस द्वारा 170720 लीटर अवैध शराब 33 किलो चरस 1275 ग्राम हीरोइन (चिट्टा) 126 ग्राम गांजा 347 ग्राम चूरा पोस्ट तथा 4,20,91,940 रुपए की नगदी व अन्य वस्तुएं जब्त की गई माइनिंग एक्ट के तहत 572 चालान करके 33,60,000 जुर्माना वसूला गया। 67 उद्घोषित अपराधियों को पकड़ा गया। राज्य भर में 88532 लाइसेन्सड हथियारों को पुलिस थानों में जमा किया गया। जो कुल जारी लाइसेंस हथियारों का 91 % है। 945 व्यक्तियों को विभिन्न अधिनियम के तहत बाउंड डाउन किया गया। इसके अतिरिक्त 863 गैर जमानती वारंटों का निपटारा भी इसी अवधि के दौरान किया गया। पुलिस द्वारा वर्तमान विधानसभा चुनाव के दौरान जो अवैध शराब, ड्रग्स व नकदी इत्यादि पकड़ी गई है उसकी संख्या पूर्व में हुए चुनावों के दौरान पकड़ी गई अवैध वस्तुओं से 6 गुना है।

हिमाचल पुलिस महानिदेशक संजय कुंडू ने गृह मंत्रालय भारत सरकार केंद्रीय अर्धसैनिक बलों सीमावर्ती राज्यों केंद्र शासित प्रदेशों के पुलिस प्रमुखों का चुनावों के दौरान समन्वय हेतु उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य की सरकार व पुलिस महानिदेशकों को गृह रक्षक उपलब्ध करवाने हेतु तथा हिमाचल प्रदेश पुलिस के सभी रैंकों के अधिकारियों व कर्मचारियों का राज्य में शांतिपूर्ण एवं स्वतंत्र चुनाव संपन्न करवाने के लिये उनका धन्यवाद प्रकट किया है।

आबकारी विभाग ने ड्राई डे के दौरान बरामद की शराब की 301 बोतलें

शिमला/शैल। विधानसभा चुनाव के दृष्टिगत आचार संहिता के दौरान अवैध शराब के खिलाफ कारवाई

करते हुए राज्य कर एवं आबकारी विभाग की टास्क फोर्स ने देसी शराब की 224 बोतलें , अंग्रेजी शराब की 64 बोतलें, बीयर की 13 बोतलें एवं 92 लीटर लाहन बरामद की है।

जिला सिरमौर में गुप्त सूचना के आधार पर टीम ने एक परिसर से देसी शराब की 108 बोतलें तथा अंग्रेजी शराब की 42 बोतलें कब्जे में लेकर दोषी के खिलाफ नाहन थाना में एफ. आई.आर. दर्ज कर आगामी कारवाई की जा रही है। इसके अतिरिक्त टीम ने जिला कुल्लू में 92 लीटर अवैध शराब को जब्त कर आबकारी अधिनियम के अंतर्गत नष्ट किया है। ड्राई डे के दृष्टिगत हिमाचल में शराब की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध है।

राज्य कर एवं आबकारी विभाग के आयुक्त यूनुस ने बताया कि ड्राई डे की अनुपालना के लिए सभी समाहर्ता, क्षेत्र प्रभारी एवं प्रवर्तन प्रभारी एवं जिला नोडल अधिकारियों को पहले ही निर्देश जारी कर दिए गए थे। ड्राई डे के दौरान लाइसेंस परिसरों में यदि विभाग एवं निर्वाचन आयोग द्वारा जारी आदेशों की उल्लंघना पाई जाती है, तो लाईसेंसी के विरुद्ध सख्त कारवाई करने के निर्देश भी जारी किए गए हैं।

आयुक्त ने कहा कि यदि कोई भी लाईसेंसी किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधियों में संलिप्त पाया जाता है तो उसके विरुद्ध कारवाई कर लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा।

उन्होंने आमजन से अपील की है कि शराब की अवैध गतिविधियों के विरुद्ध वे टोल फ्री नंबर 1800-180-8062, ईमेल vselection2022@mailhptax या व्हाट्सएप नम्बर 9418611339 पर शिकायत कर सकते हैं।

कांगड़ा जिले में 71.68 प्रतिशत रहा मतदान

शिमला/शैल। कांगड़ा जिले में विधानसभा चुनावों को लेकर मतदान की प्रक्रिया शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हो गई। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त कांगड़ा डॉ. निपुण जिंदल ने बताया कि जिले में 15 विधानसभा सीटों के लिए 71.68 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। कुल मतदान में महिलाओं का मत प्रतिशत 76.09 और पुरुषों का मतदान प्रतिशत 67.31 रहा। जिले के 13,12,774 मतदाताओं में से 9,40,976 ने मतदान में भाग लिया, इनमें 4,96,965 महिला और 4,44,008 पुरुष मतदाता रहे। इसके अलावा तीसरे जेंडर के 3 (1 नूरपुर, 1 धर्मशाला और 1 बैजनाथ) मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

बता दें, कांगड़ा जिले की 15 विधानसभा सीटों के लिए 91 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं। मतदान के लिए जिले में 1627 मतदान केंद्र बनाए गए थे।

कांगड़ा जिले में नगरोटा बगवां विधानसभा क्षेत्र में सबसे अधिक 76.72 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। यहां कुल 89898 मतदाताओं में से 68970 ने मतदान किया, जिनमें 32756 पुरुष तथा 36214 महिला मतदाता थे।

ज्वालामुखी विधानसभा क्षेत्र में 74.07 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 78661 मतदाताओं में से 58268 ने मतदान किया, जिनमें 26689 पुरुष तथा 31579 महिला मतदाता थे।

धर्मशाला विधानसभा क्षेत्र में 68.51 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 82896 मतदाताओं में से 56788 ने मतदान किया, जिनमें 27599 पुरुष तथा 29188 महिला मतदाता थे।

शाहपुर विधानसभा क्षेत्र में 73.33 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 88606 मतदाताओं में से 64978 ने मतदान किया, जिनमें 30878 पुरुष तथा 34100 महिला मतदाता थे।

इंदौरा विधानसभा क्षेत्र में 72.38 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 91857 मतदाताओं में से 66490 ने मतदान किया, जिनमें 33050 पुरुष तथा 33440 महिला मतदाता थे।

बैजनाथ विधानसभा क्षेत्र में 63.46 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 89855 मतदाताओं में से 57019 ने मतदान किया, जिनमें 26084 पुरुष तथा 30934 महिला मतदाता थे।

फतेहपुर विधानसभा क्षेत्र में 70.88 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 88676 मतदाताओं में से 62852 ने मतदान किया, जिनमें 29607 पुरुष तथा 33245 महिला मतदाता थे।

जयसिंहपुर विधानसभा क्षेत्र में 65.02 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 83461 मतदाताओं में से 54267 ने मतदान किया, जिनमें 24136 पुरुष तथा 30131 महिला मतदाता थे।

सुलह विधानसभा क्षेत्र में 70.28 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 105088 मतदाताओं में से 73855 ने मतदान किया, जिनमें 33787 पुरुष तथा 40068 महिला मतदाता थे।

देहरा विधानसभा क्षेत्र में 70.94 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 83423 मतदाताओं में से 59179 ने मतदान किया, जिनमें 27628 पुरुष तथा 31551 महिला मतदाता थे।

कांगड़ा विधानसभा क्षेत्र में 75.10 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 82598 मतदाताओं में से 62030 ने मतदान किया, जिनमें 29660 पुरुष तथा 32370 महिला मतदाता थे।

ज्वाली विधानसभा क्षेत्र में 72.93 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 100019 मतदाताओं में से 72948 ने मतदान किया, जिनमें 34170 पुरुष तथा 38778 महिला मतदाता थे।

जसवां परागपुर विधानसभा क्षेत्र में 73.69 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 78627 मतदाताओं में से 57938 ने मतदान किया, जिनमें 27677 पुरुष तथा 30261 महिला मतदाता थे।

पालमपुर विधानसभा क्षेत्र में 72.45 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 77088 मतदाताओं में से 55854 ने मतदान किया, जिनमें 26218 पुरुष तथा 29636 महिला मतदाता थे।

नूरपुर विधानसभा क्षेत्र में 75.57 प्रतिशत मतदान हुआ। यहां कुल 92021 मतदाताओं में से 69540 ने मतदान किया, जिनमें 34069 पुरुष तथा 35470 महिला मतदाता थे।

मंडी जिला में 75.17 प्रतिशत मतदान

शिमला/शैल। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त मंडी अरिंदम चौधरी ने बताया कि मंडी जिला के दस निर्वाचन विस क्षेत्रों में 75.17 प्रतिशत मतदान हुआ है। इसमें सर्वाधिक मतदान सराज विस क्षेत्र में दर्ज किया गया है। जबकि सरकाघाट निर्वाचन क्षेत्र में सबसे कम मतदान दर्ज किया गया है। बल्ह में 78.61करसोग में 76.24 सुंदरनगर में 77.29 नाचन में 78.02 द्रंग में 79.27 जोगिंद्रनगर में69.11 सरकाघाट 68.06, धर्मपुर 70.05 मंडी 74 सराज निर्वाचन क्षेत्र में 82.39 प्रतिशत मतदान हुआ है। मंडी जिला में विधानसभा चुनाव के लिए 1190 मतदान केंद्र स्थापित किए गए थे जिसमें सबसे ज्यादा 145 मतदान केन्द्र सराज विधानसभा में और सबसे कम 105 मतदान केन्द्र बल्ह में स्थापित किए गए थे जबकि करसोग विधानसभा क्षेत्र में 110, सुन्दरनगर में 113, नाचन में 126, द्रंग में 132, जोगिन्द्रनगर में 131, धर्मपुर में 107, मंडी में 111 तथा सरकाघाट में 110 मतदान केंद्र स्थापित किए गए थे । उन्होंने बताया कि जिला में 20 मतदान केंद्र पूरी तरह से महिलाओं द्वारा संचालित किए गए जबकि 2 मतदान केंद्र दिव्यांगों द्वारा संचालित किए गए । 21 मॉडल मतदान केन्द्र बनाए गए थे। इसके लिए 4760 पीठासीन, सहायक पीठासीन व मतदान अधिकारियों की तैनाती की गई थी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मंडी जिला में मतदान शांतिपूर्वक तरीके से संपन्न हुआ है।

चंबा जिला में हुआ 74.02 फीसदी मतदान

शिमला/शैल। चंबा जिला की सभी 5 विधानसभा सीटों पर मतदान शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हुआ। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त डीसी राणा ने बताया कि जिला में करीब 74.02 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया है।

डीसी राणा ने कहा कि मौसम साफ रहने के अलावा इस वर्ष चुनाव में पहली बार हिस्सा ले रहे मतदाताओं ने मतदान में अहम योगदान दिया ।

उन्होंने बताया कि जिला के 2 लाख 93 हजार 352 लोगों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

सबसे अधिक मतदान चुराह विधानभा क्षेत्र में 78.29 प्रतिशत तथा सबसे कम भरमौर विधानसभा क्षेत्र में 70.99 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि सभी विधानसभा क्षेत्रों में प्रात: 8 बजे से मतदान आरम्भ हुआ। सांय 5 बजे के बाद भी कई मतदान केंद्रों पर मतदाताओं की लम्बी कतारों के कारण मतदान देर तक चलता रहा।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र भटियात में 73.23, विधानसभा क्षेत्र चंबा में 72.50 तथा विधानसभा क्षेत्र डलहौजी में 75.26 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया।

अहिंसा मानवता के लिए सबसे बड़ी ताकत है, यह आदमी द्वारा तैयार विनाश के ताकतवर हथियार से अधिक शक्तिशाली है।
.....महात्मा गांधी

सम्पादकीय

वोट डालने के साथ ही जिम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती

मतदान और मतगणना के बीच 25 दिन का अन्तराल है। इतना लम्बा अन्तराल शायद इससे पहले नहीं रहा है और न ही इतने लम्बे अन्तराल का कोई तर्क दिया गया है। मतदान के बाद मत पेटियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी चुनाव आयोग की है। लेकिन जिस तरह से रामपुर में ईवीएम मशीनें एक अनाधिकृत वाहन में मिली है और उसके बाद घुमारवीं से भी कांग्रेस प्रत्याशी राजेश धर्माणी ने स्ट्रांग रूम में ईवीएम के साथ छेड़छाड़ किये जाने का आरोप लगाया है उससे कई गंभीर सवाल अवश्य खड़े हो जाते हैं। क्योंकि 19 लाख ईवीएम मशीनें गायब हो जाने का सवाल अभी तक अदालत में लंबित चल रहा है। चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाये बिना भी यह आशंका तो बराबर बनी रह सकती है कि रामपुर जैसे तत्व कहीं भी पाये जा सकते हैं। ऐसे में चुनाव प्रत्याशियों के अतिरिक्त आम मतदाता की भी यह ज्यादा जिम्मेदारी हो जाती है कि वह इस पर चौकसी बरते। क्योंकि इन घटनाओं पर जिस तरह के तीखे सवाल मीडिया द्वारा पूछे जाने चाहिये थे वह नहीं पूछे गये हैं। इसी के साथ यह सवाल भी स्वत: ही उठ खड़ा होता है कि क्या मतदाता की जिम्मेदारी वोट डालने के साथ ही समाप्त हो जाती है? क्या अगले चुनाव तक वह अप्रसांगिक होकर रह जाता है? क्योंकि उसके पास चयनित उम्मीदवार को वापस बुलाने का कोई वैधानिक अधिकार हासिल नहीं है। चुनाव सुधारों के नाम पर कई वायदे किये गये थे। संसद और विधानसभा को अपराधियों से मुक्त करवाने का दावा किया गया था। एक देश एक चुनाव का सपना दिखाया गया था। लेकिन इन वायदों को अमली शक्ल देने की दिशा में कोई काम नहीं किया गया। बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि इन वायदों को उछाल कर ईवीएम पर उठते सवालों की धार को कम करने का प्रयास किया गया है। इसलिये आज के परिदृश्य में लोकतंत्र में जनादेश की निष्पक्षता बनाये रखने के लिये आम आदमी का चौकस होना बहुत आवश्यक हो जाता है। क्योंकि जनादेश को किस तरह जांच एजेंसियों और धनबल के माध्यम से प्रभावित करके चयनित सरकारों को गिराने के प्रयास हो रहे हैं यह लम्बे अरसे से देश में चर्चा का विषय बना हुआ है। इसलिए ईवीएम को लेकर जो घटनाएं सामने आ चुकी है उनके परिदृश्य में आम आदमी का सतर्क रहना बहुत आवश्यक हो जाता है। पिछले लम्बे अरसे से गंभीर आर्थिक सवालों से आम आदमी का ध्यान हटाने के लिए समानान्तर में भावनात्मक मुद्दे उछालने का सुनियोजित प्रयास होता आ रहा है। पिछले दिनों मुफ्ती योजनाओं के वायदों को लेकर प्रधानमंत्री से आरबीआई तक ने चिंता व्यक्त की है। क्या उसका कोई असर इन चुनावों में बड़े दलों के दृष्टि पत्र और गारंटी पत्र में देखने को मिला है? इन्हीं चुनाव के दौरान प्रदेश की वित्तीय स्थिति उस मोड़ तक पहुंच गयी थी जहां कोषागार को भुगतान से हाथ खड़े करने पड़ गये थे। इसका असर आम आदमी पर पड़ेगा यह तय है। यह भी स्पष्ट है कि अधिकांश मीडिया के लिये यह कोई सरोकार नहीं रहेगा। दृष्टि पत्र और गारंटी पत्र दोनों की प्रतिपूर्ति आज प्रदेश की आवश्यकता है। सरकार किसी की भी बने लेकिन आम आदमी के सामने प्रदेश की वित्तीय स्थिति पर श्वेत पत्र लाया जाना आवश्यक होगा। यदि श्वेत पत्र नहीं लाया जाता है तो सरकार को वित्तीय स्थिति पर कोई सवाल उठाने का अधिकार नहीं रह जायेगा। सरकार बनने पर यह आम आदमी की जिम्मेदारी होगी कि सरकार को श्वेत पत्र जारी करने के लिए बाध्य करें।

वास्तविकता से परे है ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत के अधोपतन की कथा

गौतम चौधरी

इन दिनों ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत के अधोपतन की चर्चा जोरों पर है। पूरा सोशल मीडिया भारत सरकार, खासकर नरेन्द्र मोदी के चरित्र चित्रण में लगा है। कुछ खास लोगों के लिए यह मोदी विरोध, भाजपा सरकार विरोध आदि के लिए अच्छा मौका है। उन्हें मानों एकदम से बेहद बढ़िया मौका हाथ लगा है। वर्तमान सरकार के विरोधियों को एकाएक भारत की गरीबी, भुखमरी और कुपोषण की चिंता सताने लगी है। इस प्रसंग में जो आंकड़े सामने आये हैं उसे सामान्य ज्ञान के आधार पर भी बहुत आसानी से रद्द किया जा सकता है लेकिन इसपर थोड़ी चर्चा जरूरी है।

यह सत्य है कि अभी भी हमारे देश में कतिपय जमीनी समस्याएं मुंह बाए खड़ी हैं। तेजी से उनके समाधान के लिए न तो सरकार सक्रिय दिख रही है और न ही समाज प्रयत्नशील है, पर ऐसी भी कमी नहीं है कि भारत 107 स्थान पर खड़ा हो। दुनिया के मानक आर्थिक संस्थानों का मानना है कि भारत की इकोनामी तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। कुछ का तो यहां तक कहना है कि 2029 – 30 तक भारत की गणना आर्थिक रूप से समृद्ध देशों में होगी। यह तो समय बताएगा कि कल क्या होगा लेकिन आर्थिक विशेषज्ञों के अनुमान को सिरे से नकारा नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में जब भारत में खाद्यान्न निर्यात की स्थिति है और खासकर गेहूं तथा चावल की कमी नहीं है तो यह आंकड़ा आया कहां से। सच पूछिए तो भारत दुनिया का एकलौता ऐसा देश है, जहां की सरकार अपनी कुल आबादी में से लगभग 80 करोड़ लोगों को सस्ता अनाज उपलब्ध करा रही है। गांव में कहीं खाद्यान का संकट नहीं दिखता है। कोरोना काल में भी जब दुनिया के समृद्धशाली देश घुटने टेक रहे थे उस वक्त भी भारत ने अपनी जनता के लिए खाद्यान की कमी नहीं होने दी। हां भ्रष्टाचार के कारण थोड़ी परेशानी हो रही है लेकिन सरकार उस परेशानी में भी लोगों को खाद्यान उपलब्ध करा रही है। ऐसे में भूखमरी का हौवा खड़ा करना विशुद्ध राजनीतिक मुद्दा प्रतीत होता है। लोकतंत्र में सरकारों की आलोचना आम बात है। होनी भी चाहिए लेकिन ऐसे मुद्दे पर सरकार की आलोचना नहीं करनी चाहिए जिसमें सरकार का प्रदर्शन बेहतर है।

ऐसे में हमें सर्वेक्षण करने वाले संस्थान व इकाइयों को जमीनी सच्चाई हमें जरूर जाननी चाहिए। भारत सरकार को भी चाहिए कि वह ऐसे संवेदनशील मुद्दों पर मौलिक भौतिक मूल्यांकन के आधार पर तथ्याधारित विवरण आम आवाम के समक्ष रखें ताकि अनावश्यक बातों को तूल देने वालों का मुंह बंद किया जा सके।

इन दिनों तर्क दिए जा रहे हैं कि जब भारत को पांचवे नंबर की इकोनॉमी बताया गया तो सरकार खुद की पीठ थपथपा रही थी। अब जब उसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने हंगर इंडेक्स में भारत को निचले पादान पर खड़ा किया तो फिर आपत्ति क्यों? यक्ष प्रश्न यह है कि क्या दोनों की तुलना करना सही है? मुझे लगता है नहीं, ऐसा कदापि नहीं है, क्यूंकि हंगर इंडेक्स के मामले में कई देशों की रैंकिंग प्रथम दृष्टि में ही गलत दिखता है। कुछ लोग सरकार की मानसिकता की तारीफ करते हैं और सस्ते में अन्न उपलब्ध कराने वाली योजना को सही ठहराते हैं लेकिन भ्रष्टाचार को इसके लिए कारण मान लेते हैं। यहां एक बात और बता दें कि खाद्यान्न वितरण की जिम्मेदारी राज्यों सरकारों के पास है। यदि ऐसा है तो इसके लिए मोदी कहां दोषी साबित होते हैं? राजस्थान, बिहार, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, झारखंड आदि प्रांतों में भाजपा की सरकार नहीं है और आंकड़ों के अनुसार सबसे ज्यादा भूखे इन्हीं प्रांतों में हैं। ऐसे में केन्द्र की मोदी सरकार पर आरोप लगाना एकदम जायज नहीं है। कोविड वैक्सीन का मामला हो या कोविड से हुई मृत्यु, विदेशी और कुछ भारतीय मीडिया की गलत रिपोर्टिंग तथा अमेरिका, स्पेन, इटली की बिगड़ी हालत को दबाने के लिए भारत के हालत को बढ़ा चढ़ा कर उछाला गया। सामान्य जीवन में भी अखबारों में, अस्पताल के गलियारों में, इलाजरत मरीजों के फोटो दिखने को मिलती रही हैं। यानी अस्पतालों की बुरी हालत हमेशा से रही है, इसे अनदेखा कर कोविड के समय अप्रत्याशित हालत के लिए सरकार को दोषी ठहराया गया, लेकिन जब तसल्ली से पड़ताल हुई तो वास्तविकता कुछ अलग ही थी। अब हंगर इंडेक्स का नया मुद्दा सामने है और टारगेट मोदी के नेतृत्व वाली सरकार है। यह मुद्दा भी धराशायी होगा क्योंकि भारत के हर मजबूत नेता को पश्चिमी जगत कमजोर करने की कोशिश की है। मोदी मजबूत नेता के रूप में उभरकर सामने आए हैं। यही कारण है कि अमेरिका से लेकर चीन तक भारत की नकारात्मक छवि को उभारने में लगा है। भारत में भी एक ऐसी लॉबी है जो अमेरिकी इशारों पर काम करती है। भूख का मामला वास्तविकता से ज्यादा राजनीतिक प्रतीत होता है। इसके लिए न तो समाज को और न ही सरकार को घबड़ाने की जरूरत है।

स्वास्थ्य लॉकर की सेवाएं अब डिजिलॉकर के सभी पंजीकृत उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध

शिमला/शैल। डिजिलॉकर ने आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) के साथ अपने दूसरे स्तर के एकीकरण को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक प्रामाणिक दस्तावेज विनिमय मंच है। डिजिलॉकर के सुरक्षित क्लाउड आधारित स्टोरेज मंच का उपयोग अब स्वास्थ्य रिकॉर्ड जैसे कि टीकाकरण रिकॉर्ड, डॉक्टर के प्रिस्क्रिप्शन, प्रयोगशाला रिपोर्ट, अस्पताल से छुट्टी के सारांश आदि को रखने और इसे प्राप्त करने के लिए एक स्वास्थ्य लॉकर के रूप में किया जा सकता है।

इससे पहले डिजिलॉकर ने एबीडीएम के साथ पहले स्तर के एकीकरण पूरा किया था। इसके तहत इसने अपने 13 करोड़ उपयोगकर्ताओं के लिए एबीएचए या आयुष्मान भारत स्वास्थ्य खाता निर्माण सुविधा को जोड़ा था। यह नवीनतम एकीकरण अब उपयोगकर्ताओं को व्यक्तिगत स्वास्थ्य रिकॉर्ड (पीएचआर) एप के रूप में डिजिलॉकर का उपयोग करने में सक्षम बनाएगा। इसके अलावा एबीएचए धारक अपने स्वास्थ्य रिकॉर्ड को विभिन्न एबीडीएम पंजीकृत स्वास्थ्य सुविधाओं जैसे कि अस्पताल व प्रयोगशालाओं से भी जोड़ सकते हैं और डिजिलॉकर के माध्यम से उन तक पहुंच सकते हैं। इस एप पर उपयोगकर्ता अपने पुराने स्वास्थ्य रिकॉर्ड को स्कैन और अपलोड भी कर सकते हैं। इसके अलावा वे एबीडीएम पंजीकृत स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ चयनित रिकॉर्ड साझा कर सकते हैं।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) के सीईओ डॉ.आर.एस.शर्मा ने उपयोगकर्ताओं के लिए इस एकीकरण के लाभ को रेखांकित किया। उन्होंने कहा, 'एबीडीएम के तहत हम एक अंतर – परिचालित स्वास्थ्य इकोसिस्टम का निर्माण कर रहे हैं। एबीडीएम के साथ एकीकृत सार्वजनिक व निजी, दोनों क्षेत्रों के भागीदारों के विभिन्न एप्लीकेशन इस योजना की पहुंच को अधिक उपयोगकर्ताओं तक विस्तारित करने और अधिक सुविधाओं को जोड़ने में सहायता कर रहे हैं। डिजिलॉकर, प्रामाणिक दस्तावेजों को रखने और इसे प्राप्त करने के लिए एक विश्वसनीय और लोकप्रिय एप है। इसे देखते हुए यह एक महत्वपूर्ण विकास है, क्योंकि उपयोगकर्ता अब इसे पीएचआर एप के रूप में उपयोग कर सकेंगे और पेपरलेस रिकॉर्ड संरक्षण का लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

डिजिटल इंडिया कारपोरेशन के एमडी और सीईओ अभिषेक सिंह ने एकीकरण के बारे में कहा, 'हमें अपने 130 करोड़ पंजीकृत उपयोगकर्ताओं तक एबीडीएम के लाभों का विस्तार करने पर गर्व है। इस मंच ने पहले ही लगभग 85 हजार एबीएचए संख्या को प्राप्त करने में सहायता की है। स्वास्थ्य लॉकर एकीकरण के साथ हम इस बात को लेकर सकारात्मक हैं कि अधिक लोग आसानी से अपने स्वास्थ्य रिकॉर्ड को डिजिटल रूप से लिंक और प्रबंधित करने में सक्षम होंगे। डिजिलॉकर का लक्ष्य एबीएचए उपयोगकर्ताओं के लिए इसे एक पसंदीदा स्वास्थ्य लॉकर बनना है।

स्वास्थ्य लॉकर की सेवाएं अब डिजिलॉकर के सभी पंजीकृत उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध हैं।

2017 के विधान सभा चुनावों की तुलना में हिमाचल प्रदेश में जब्ती में पांच गुना वृद्धि

शिमला। भारतीय चुनाव आयोग द्वारा बनाई गई व्यापक योजना, समीक्षा और उस पर की गई आगे की कारवाई के अलावा सुरक्षा एजेंसियों की सक्रिय भागीदारी के चलते गुजरात और हिमाचल प्रदेश राज्यों में जारी विधानसभा चुनावों के दौरान रिकॉर्ड संख्या में रुपये की बरामदगी की गई है। गुजरात विधानसभा चुनाव 2022 की तारीखों की घोषणा करते हुए मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने प्रलोभन मुक्त चुनाव कराने पर बल दिया और इसके लिए हिमाचल प्रदेश में बड़े पैमाने पर रुपये की बरामदगी का उदाहरण दिया। इस अभियान के तहत चुनाव की घोषणा के कुछ ही दिनों के भीतर गुजरात में 71.88 करोड़ रुपये की बरामदगी हुई जो 2017 के विधानसभा चुनावों के लिए लागू आचार संहिता की पूरी अवधि के दौरान हुई 27.21 करोड़ रुपये की बरामदगी से कहीं ज्यादा है। इसी तरह हिमाचल प्रदेश में भी इस अवधि में 50.28 करोड़ रुपये की बरामदगी हुई जो कि 2017 के 9.03 करोड़ की तुलना में पांच गुना से भी ज्यादा है। अत: अगर नागरिक सतर्क हो जाएं और बड़े पैमाने पर सीविजिल ऐप (cVigil App) का इस्तेमाल करना शुरू कर दें तो चुनावों में धन-बल के इस्तेमाल पर रोक लगाने का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

चुनावों की घोषणा से कई महीने पहले से ही प्रभावी व्यय निगरानी प्रक्रिया शुरू हो जाती है और इसके लिए अनुभवी अधिकारियों की व्यय पर्यवेक्षकों के तौर पर नियुक्ति करने के साथ ही प्रवर्तन एजेंसियों को संवेदनशील बनाने और उनके कार्य की समीक्षा करने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है ताकि निगरानी की प्रक्रिया को अधिक समन्वित और व्यापक बनाया जा सके, ऐसे निर्वाचन क्षेत्रों की पहचान की जा सके जहां धन-बल का अधिक इस्तेमाल होने की आशंका है, निगरानी प्रक्रिया को पूरा करने के लिए पर्याप्त संख्या में निगरानी दलों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके और जिला चुनाव अधिकारियों/पुलिस अधीक्षकों के साथ मिलकर नियमित तौर पर आगे की कारवाई की योजना बनाई जा सके और चुनावों में धन-बल के इस्तेमाल को रोका जा सके। केंद्रीय पर्यवेक्षकों, जिला चुनाव अधिकारियों और पुलिस अधीक्षकों के साथ मिलकर चुनाव आयोग ने पूरी चुनावी तैयारी की समीक्षा और व्यापक निगरानी के लिए विभिन्न जगहों के दौरे करने शुरू कर दिए हैं।

हालांकि गुजरात राज्य में चुनाव की घोषणा के बाद के शुरुआती दिनों में ही पुलिस ने करीब 1,10,000 लीटर शराब बरामद की, जिसकी कीमत 3.86 करोड़ रुपये थी। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने भी मुंदरा बंदरगाह पर बड़े पैमाने पर 64 करोड़ रुपये के खिलौने और सामान की गलत घोषणा के माध्यम से तस्करी किए जाने की सूचना दी है यह सामान आयात कार्गो में छिपाकर लाया जा रहा था। इस मामले के मास्टरमाइंड समेत दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है और आगे की जांच की जा रही है। गुजरात विधानसभा के चुनावों में धनबल के इस्तेमाल पर प्रभावी तौर पर अंकुश लगाने के लिए भारत के चुनाव आयोग ने पहले ही 69 व्यय पर्यवेक्षकों को तैनात किया है। 27 विधानसभा क्षेत्रों को व्यय संवेदनशील निर्वाचन क्षेत्रों के रूप में चिह्नित किया गया है।

आयोग के दलों ने सितंबर में गुजरात और हिमाचल प्रदेश का दौरा कर चुनावी तैयारियों की समीक्षा की। इसके अलावा आयोग के कुछ अन्य दलों ने भी इन दोनों राज्यों की अक्तूबर में यात्रा कर विधानसभा चुनाव तैयारियों की निगरानी की। आयोग के दलों ने इन दोनों राज्यों में सुरक्षा एजेंसियों, जिला प्रशासन और पुलिस के नोडल अधिकारियों से मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए लाई जाने वाली वस्तुओं की करीब से और प्रभावी निगरानी करने को कहा और इस संबंध में तैयारियों की व्यापक समीक्षा की।

हिमाचल प्रदेश में अपने दौरे के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार और चुनाव आयुक्त अनूप चंद्र पाण्डेय ने जिला और सुरक्षा एजेंसियों की तैयारियों की समीक्षा की तथा अवैध खनन व्यवसाय और मतदान को प्रभावित करने वाली शराब, संदिग्ध नकद राशि और वस्तुओं के संबंध में कड़ी निगरानी बरतने का निर्देश दिया। इसी तरह से आयकर विभाग की जांच शाखा, जो कि एक प्रमुख भागीदार प्रवर्तन एजेंसी है, ने हिमाचल प्रदेश और आसपास के राज्यों में स्थित पत्थर तोड़ने की 27 इकाइयों पर छापे डाले और वहां से काफी मात्रा में नकद रुपये बरामद किए। इसके अलावा उन्होंने देसी शराब के निर्माताओं और विक्रेताओं पर भी छापे मारे और वहां से भी बेहिसाब धन बरामद किया। इसके अलावा यहां से खातों में गड़बड़ी के बहुत से सबूत बरामद किए। पुलिस और आबकारी अधिकारियों तथा अन्य एजेंसियों ने भी शराब, ड्रग्स और मुफ्त वस्तुओं की बरामदगी के लिए विभिन्न स्थानों पर छापे मारे। हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में धन-बल पर अंकुश लगाने और प्रभावी निगरानी के लिए चुनाव आयोग ने 23 व्यय पर्यवेक्षकों की भी तैनाती की है।

यहां तक कि हाल में बिहार, ओडिशा, महाराष्ट्र, तेलंगाना, हरियाणा और उत्तर प्रदेश राज्यों की सात विधानसभा सीटों के लिए संपन्न हुए उपचुनावों में भी 9.35 करोड़ रुपये मूल्य की बरामदगी की गई। तेलंगाना के मुनुगोडे विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में 6.6 करोड़ रुपये नकद के साथ-साथ हजारों लीटर शराब, 1.78 करोड़ रुपये मूल्य की बहुमूल्य धातुओं की रिकॉर्ड बरामदगी की गई। यह निर्वाचन क्षेत्र चुनाव में भारी धनराशि व्यय करने के लिए जाना जाता है। जिन निर्वाचन क्षेत्रों में मुनुगोडे निर्वाचन क्षेत्र जैसी व्यापक निगरानी की जरूरत महसूस की गई वहां आयोग ने अतिरिक्त व्यय पर्यवेक्षकों की तैनाती की, निगरानी दलों की संख्या में वृद्धि की और पर्यवेक्षकों के साथ वर्चुअल बैठकें कर समीक्षा और फीडबैक सत्र किए।

आयोग ने गत सात नवम्बर को हिमाचल प्रदेश और उसके पड़ोसी राज्यों के मुख्य सचिवों, प्रधान सचिवों (गृह), पुलिस महानिदेशकों, महानिदेशक (आयकर) आबकारी आयुक्तों, आईजीपी (ऑपरेशंस) और सीईओ के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की और कानून तथा व्यवस्था के हालत की समीक्षा की। उन्होंने चुनाव प्रक्रिया के दौरान अंतरराज्यीय सीमा पर होने वाले आवागमन पर कड़ी निगाह रखने और जरूरत हो तो सीमाओं को सील करने के संबंध में कदम उठाए। आयोग ने स्वतंत्र और निष्पक्ष तथा प्रलोभन मुक्त चुनाव प्रक्रिया को संपन्न करने के लिए की गई चुनावी तैयारियों और केंद्रीय पर्यवेक्षकों के इस बारे में पिछले 72 घंटे में किए गए प्रयासों की भी समीक्षा की। जिन राज्यों में चुनाव होने वाले हैं उनमें करीबी निगरानी रखने के प्रयास तब तक जारी रहेंगे जब तक चुनाव प्रक्रिया संपन्न नहीं हो जाती और इस दौरान होने वाली बरामदगियों की संख्या भी काफी बढ़ने की उम्मीद है।

हिमाचल प्रदेश और गुजरात में (10 – 11 – 2022) तक की गई की बरामदगी का ब्यौरा इस प्रकार है: –

राज्य	नकद रुपये करोड़	शराब मात्रा लीटर	मूल्य करोड़ रुपये	ड्रग्स मूल्य करोड़ रुपये	बहुमूल्य धातुएं मूल्य करोड रुपये	मुत सुविधा की पेशकश मूल्य करोड. रूपये	कुल बरामदगी करोड़ रूपये
हिमाचल प्रदेश	17.18	972818.24	17.50	1.20	13.99	0.41	50.28
गुजरात	0.66	109189.19	3.86	0.94	1.86	64.56	71.88

सौर ऊर्जा, भारत को नेट जीरो का लक्ष्य हासिल करने में मदद कर सकती है

आर.के.सिंह
भारत सरकार के ऊर्जा और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री

शिमला। दुनिया सौर क्रांति की दहलीज़ पर है। सूर्य, न केवल दुनिया का सबसे प्रचुर और स्वच्छ ऊर्जा स्रोत है, बल्कि व्यापक तौर पर इसे स्वीकार किए जाने के साथ, यह अंतर्राष्ट्रीय जलवायु कारवाई को आगे बढ़ाने के लिए सुलभ ऊर्जा के रूप में आवश्यक हो गया है। कई देशों के पास अब अच्छी तरह से स्थापित नीतियां और विनियम हैं, जो इसे वैश्विक जलवायु कारवाई के लिए आवश्यक पैमाना और सामर्थ्य प्रदान करते हैं। सौर ऊर्जा, न केवल विकासशील देशों में ऊर्जा पहुंच और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, बल्कि विकसित देशों में बैटरी ऊर्जा संचयन, इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग अवसंरचना और हाइड्रोजन उत्पादन के एकीकरण के माध्यम से ऊर्जा के स्रोतों में बदलाव के लिए सुविधा भी प्रदान कर रही है।

लागत, सरल और आसान रख-रखाव, सहज संरचना बदलाव, विभिन्न अनुप्रयोग आदि के सन्दर्भ में अन्य ऊर्जा प्रौद्योगिकियों पर तकनीकी श्रेष्ठता के बावजूद, सौर ऊर्जा उत्पादन एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना कर रहा है, जिसके समाधान की आवश्यकता है। वैश्विक फोटोवोल्टिक (पीवी) विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखला कुछ ही देशों में केंद्रित है, जिसके परिणामस्वरुप मौजूदा सीमित आपूर्ति श्रृंखलाओं में अवरोध होने के बाद, हाल ही में कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई है।

इन व्यवधानों ने महत्वपूर्ण सवाल खड़े किए हैं।

कोविड-19 संकट एवं बहुपक्षीय चुनौतियों के कारण वस्तुओं की कीमतों में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। ऊर्जा, कच्चे माल और विनिर्मित वस्तुओं के आयात- जो ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं- पर कुछ देशों की उच्च निर्भरता के कारण, इन देशों का ध्यान सौर ऊर्जा पर केन्द्रित हुआ है। अतिरिक्त चुनौती सौर पैनलों की खरीद से जुड़ी है। अनुमान है कि सौर पीवी की वैश्विक मांग, निम्नतम स्तर पर भी, को पूरा करने में 2030 तक 5,000 गीगावाट (जीडब्ल्यू) की संचयी क्षमता की आवश्यकता होगी। हालांकि, सौर पैनलों की कम होती कीमतों और दुनिया भर में की जा रही पहलों को देखते हुए, यह अनुमान लगभग 10,000 गीगावाट तक भी पहुंच सकता है। इसका मतलब है कि हर साल लगभग 800-1,000 गीगावाट तक पीवी की वार्षिक क्षमता में वृद्धि हो सकती है, जो अब तक 200 गीगावाट तक सीमित थी।

भविष्य में वर्तमान क्षमता से पांच गुना अधिक की खरीद की आवश्यकता होगी, इसलिए हमें सहनीय तथा विविधतापूर्ण आपूर्ति श्रृंखला तैयार करने की आवश्यकता है। देश अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाकर सहनीयता में सुधार किया जा सकता है। सौर पीवी विनिर्माण परियोजनाओं के विकास को समर्थन देने का सबसे अच्छा तरीका उत्पादन-लागत से जुड़े विभिन्न कारकों को वित्तीय प्रोत्साहन के माध्यम से प्रत्यक्ष समर्थन प्रदान करना है, जैसे टैक्स में छूट, कम लागत वाला वित्तपोषण या प्रत्यक्ष सब्सिडी (उदाहरण के लिए, भूमि या अवसंरचना में निवेश)।

इसलिए, मांग में वृद्धि करना और सहायक विनिर्माण कंपनियों को प्रोत्साहित करना भी उद्योग को विकसित करने का एक कुशल तरीका है, लेकिन इसके लिए और निवेश करने की आवश्यकता होगी। भारत ने हाल ही में सौर पीवी विनिर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना का संचालन किया है, जो सफल रही है। इसके तहत परियोजनाओं के लिए बोली लगाने वाले ऐसी विनिर्माण सुविधाओं की स्थापना और संचालन करेंगे, जो पॉलीसिलिकॉन, इनगोट, वेफर्स, सेल और उच्च दक्षता वाले पैनल के निर्माण के साथ पूरे उत्पादन चक्र का भी विस्तार करेंगे।

सौर पीवी विनिर्माण क्षेत्र की दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता, तीव्र और लागत प्रभावी स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन स्रोत को अपनाने के लिए महत्वपूर्ण है। तेजी से विकास और परियोजनाओं की शुरुआत से उत्पाद की बिक्री तक में लगने वाले लंबे समय के कारण, आपूर्ति और मांग के असंतुलन का जोखिम बढ़ जाता है, जिससे लागत में वृद्धि हो सकती है और आपूर्ति में कमी आ सकती है। सौर पीवी क्षेत्र में, सभी आपूर्ति श्रृंखला खंडों के लिए शुद्ध लाभ-प्राप्ति अनिश्चित व अस्थिर रही है। इस प्रकार, इस व्यवसाय के सभी उप-क्षेत्रों की कमजोरियों को सहायक नीतियों द्वारा नियंत्रित किए जाने की आवश्यकता है।

देशों के बीच आपसी सहयोग ही ऊर्जा उत्पादन के स्रोतों में बदलाव, निवेश को बढ़ावा देने और लाखों नए हरित रोजगार पैदा करने का आधार होगा। सरकारों और हितधारकों ने सौर पीवी निर्माण पर अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया है, लेकिन और अधिक सहयोग की आवश्यकता है। तेजी से कार्बन मुक्त हो रही दुनिया में इस क्षेत्र के रणनीतिक महत्व के लिए समान विचारधारा वाले देशों को साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। उम्मीद है कि हर जगह मॉड्यूल निर्माण हो रहा होगा। प्रारंभिक वर्षों में समर्थन की आवश्यकता है और एक वैश्विक समुदाय के रूप में, हमें विनिर्माण के लिए वातावरण को सक्षम करने में अन्य देशों को समर्थन प्रदान करने की आवश्यकता है। 110 सदस्य और हस्ताक्षरकर्ता देशों के साथ, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन इस बदलाव के लिए प्रयासरत है।

नई प्रौद्योगिकियां बाजार में आएंगी, जिनमें सौर-प्लस बैटरी का प्रतिस्पर्धी होना शामिल हैं। आपूर्ति श्रृंखला के साथ नई सौर पीवी विनिर्माण सुविधाएं 2030 तक अरबों रुपये के निवेश आकर्षित कर सकती हैं। पूरी आपूर्ति श्रृंखला में वार्षिक निवेश स्तर को दोगुना करने की आवश्यकता है। पॉलीसिलिकॉन, इनगोट और वेफर्स निर्माण महत्वपूर्ण चरण हैं और बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इनमें अधिक निवेश की आवश्यकता होगी। सौर ऊर्जा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है तथा सौर ऊर्जा के अलावा कोई अन्य उपयुक्त तकनीक नहीं है, जो घरों और समुदायों को ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भर बना सकती है। ग्रिड और मिनी ग्रिड का आपसी जोड़ तथा सामुदायिक रूफटॉप सौर प्रतिष्ठान इस बदलाव को सक्षम करेंगे। सौर ऊर्जा, नेट जीरो आधरित भारत के उस लक्ष्य को हासिल करने की आधारशिला बन सकती है, जिसे देश ने 2070 के लिए निर्धारित किया है।

मंडी के लोअर ढांगू में जिला स्तर पर 'विश्व निमोनिया दिवस-2022' मनाया गया

शिमला/शैल। मंडी जिले के नेरचौक लोअर ढांगू में 'विश्व निमोनिया दिवस-2022' अभियान जिला स्तर पर जागरूकता दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम मुख्य चिकित्सा अधिकारी के तत्वावधान में जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश ठाकुर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था।

उन्होंने बताया कि यह

दिवस-2009 में 'ग्लोबल कोएलिशन अगेंस्ट चाइल्ड निमोनिया' द्वारा निमोनिया रोग का शीघ्र पता लगाने, उपचार आदि सुनिश्चित कराने एवं रोकने संबंधी जागरूक करना है। उन्होंने बताया कि निमोनिया फेफड़ों में एक गम्भीर संक्रमण की स्थिति है जो बैक्टिरिया, विषाणु और क्वक के कारण होता है। निमोनिया में खांसी, जुकाम, बुखार, तेज सांस चलना, सांस लेने में मुश्किल होना, पसली का धंसना, नाक फूलना और दूध न पी पाना जैसे लक्षण पाये जाते हैं। यदि समय पर इन लक्षणों को पहचान न गया तो शिशु की मृत्यु भी हो सकती है। भारत में निमोनिया से 0-5 साल के लगभग 1.50 लाख बच्चों की मौत हो जाती है, यानी कि हर 15 सेकंड में एक बच्चे की मौत निमोनिया के कारण होती है। निमोनिया एक संक्रामक रोग है जो खांसने या छींकने से फैल सकता है। यह बच्चे के जन्म के दौरान रक्त या दूषित स्थान या आसपास की सफाई न होने से, वायु प्रदूषण से फैलता है। उन्होंने बताया कि निमोनिया छोटे बच्चों के अलावा बड़े व्यक्तियों में भी हो सकता है।

उन्होंने बताया कि निमोनिया की गंभीरता को देखते हुए भारत सरकार ने सांस नामक कार्यक्रम चलाया हुआ है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निमोनिया से ग्रसित बच्चे का शीघ्र पता लगाया जाता है और उसे उपचार प्रदान किया जाता है। इसको रोकने के लिए जागरूकता अभियान चलाया गया है, ताकि समय रहते इसका इलाज मिले और निमोनिया से होने वाली मौतों को रोका जा सके। वहीं, जन शिक्षा एवं सूचना अधिकारी सोहन लाल ने बताया कि शिशु को जन्म के बाद ज्यादा देर तक गीला नहीं रखना चाहिए। संक्रमित व्यक्तियों से दूर रखना चाहिए। शिशु को गर्म रखने के लिए जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान शुरू कर देना चाहिए। शिशु को छूने से पहले हाथ साफ करने चाहिए तथा जन्म के तुरन्त बाद नहलाना नहीं चाहिए। जन्म के बाद जरूरी टीके लगवाने चाहिए। शिशु को 6 सप्ताह, 10 सप्ताह और 14 सप्ताह पर पी.सी.वी., एम.आर. का टीका तथा विटामिन 'ए' से बच्चों को निमोनिया से बचाया जा सकता है। उन्होंने बताया जिला में सभी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं और आशा कार्यकर्ताओं को बच्चों को निमोनिया के लिए जरूरी दवाएं, जिसमें अमोक्सी लीन, जैन्टामाईन इंजेक्शन आदि उपलब्ध करवाये जा रहे हैं।

इस अवसर पर मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम स्थान पर भारती, दूसरे स्थान में शीतला और तीसरे स्थान पर सीमा और नीलम रहीं। मुख्य अतिथि ने इन प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से नवाजा। कार्यक्रम में करीब 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया था।

शिकारी माता मन्दिर के कपाट मार्च 2023 तक रहेंगे पूर्णतय बन्द

शिमला/शैल। शिकारी माता मन्दिर में 13 नवम्बर से रूक-रूक कर बर्फवारी हो रही है तथा आगामी दिनों में भारी बर्फबारी की सम्भावना है। वर्फबारी के कारण स्थानीय प्रशासन द्वारा शिकारी माता मन्दिर के कपाट दिनांक 15 नवम्बर 2022 से मार्च 2023 तक पूर्णतय बन्द करने के आदेश जारी किये गए हैं।

एसडीएम थुनाग एवं अध्यक्ष शिकारी माता मन्दिर कमेटी थुनाग पारस अग्रवाल ने बताया कि शिकारी माता मन्दिर में 13 नवम्बर से रूक-रूक कर बर्फवारी हो रही है तथा आगामी दिनों में भारी बर्फबारी की सम्भावना है। इस कारण भुलाह-रायगढ तथा अन्य सम्पर्क मार्गो से शिकारी माता मन्दिर के रास्ते मार्च माह तक पूर्णतय बन्द रहते है। इसलिए शिकारी माता मन्दिर की ओर जाने वाले स्थानों से सभी प्रकार का सम्पर्क कट जाता है। इसलिए उन्होंने कहा कि कोई भी श्रद्धालु, पर्यटक, टरैक्रज इस दौरान शिकारी माता मन्दिर की ओर जाने का प्रयास न करें।

पारस अग्रवाल ने स्थानीय जनता से आग्रह करते हुए कहा कि उनके सम्पर्क में आने वाले सभी नागरिकों को भी इस की जानकारी उपलब्ध करवाएं ताकि कोई भी श्रद्धालु, पर्यटक तथा टरैक्रज बर्फबारी के कारण अपनी जान जाखिम में न डाले।

कांग्रेस नेताओं ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को श्रद्धा सुमन अर्पित किये

शिमला/शैल। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सांसद प्रतिभा सिंह ने देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को

उनकी जयंती पर याद करते हुए बाल दिवस पर बच्चों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा है कि चाचा नेहरू का देश की आजादी और इसके नव निर्माण में बहुत बड़ा योगदान है जिसे कभी नही भुलाया जा सकता। उन्होंने कहा कि चाचा नेहरू बच्चों से बहुत प्यार और स्नेह करते थे और यही बजह है कि देश उनकी जयंती को बाल दिवस के रूप में मनाता है। उन्होंने कहा है कि पंडित नहेरु हमारे हमेशा प्रेरणास्रोत रहेंगे।

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन में कांग्रेस नेताओं ने पंडित जवाहर लाल नेहरू को याद करते हुए उनके छाया चित्र पर अपने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

पार्टी नेताओं में कांग्रेस उपाध्यक्ष नरेश चौहान, महासचिव अमित पाल सिंह, प्रदेश महिला कांग्रेस अध्यक्ष जैनब चंदेल, प्रदेश कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग के अध्यक्ष अमित नंदा, उपाध्यक्ष सैन राम नेगी, जिला अध्यक्ष शिमला शहरी वीर सिंह जामवाल, बलदेव सिंह ठाकुर, चमनलाल सुख लाल, सत पाल, सुरेंदर वर्मा, पवन शर्मा, डी के रतन, कृष्णा कुमारी, मंजू, विनोद भाटिया, बबली सल्होत्र सहित कांग्रेस के पदाधिकारियों एवम कार्यकर्ताओं ने चाचा नेहरू के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

जिला कांगड़ा में घर से मतदान करने वालों में 96 प्रतिशत से अधिक ने डाला वोट

शिमला/शैल। जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. निपुण जिंदल ने बताया कि निर्वाचन आयोग ने इस बार 80 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गो और चलने फिरने में असमर्थ दिव्यांग मतदाताओं के लिए घर से पोस्टल बैलेट के जरिए वोट डालने की व्यवस्था की थी। उन्होंने बताया कि कांगड़ा जिले में 80 साल से अधिक आयु और चलने फिरने में असमर्थ दिव्यांगजनों की श्रेणी में 6619 पात्र लोगों को डाक मतपत्र जारी किए गए थे। जिनमें से अब तक 6418 लोग अपने मताधिकार का प्रयोग कर चुके हैं।

उन्होंने कहा कि जिले में घर से मतदान का विकल्प चुनने वाले वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग जनों में से 96 प्रतिशत से अधिक ने वोट डालकर चुनावों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है। उन्होंने कहा कि जिले में अन्य सभी मतदाताओं को भी इससे प्रेरणा लेते हुए लोकतंत्र के महापर्व में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए और भारी संख्या में 12 नवम्बर को वोट डालने के लिए अपने घरों से निकलना चाहिए।

जिले में डाक मतपत्र के माध्यम से वोट डालने वाले 80 वर्ष से अधिक बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाताओं में नूरपुर विधानसभा क्षेत्र में 146 मतदाताओं में से 138 ने वोट डाला। इंदौरा में मतदान करने वालों की संख्या 211 रही जबकि पात्र मतदाता 216 थे। विधानसभा क्षेत्र फतेहपुर में 493 पात्र मतदाताओं में से 474 ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। जवाली में 511 में से 497 मतदाताओं ने घर से वोट डाला। देहरा विस क्षेत्र में पात्र मतदाताओं की संख्या 273 थी जिनमें 260 ने अभी तक मतदान किया है। जसवां परागपुर में 497 में से 483 लोगों ने वोट डाला। वहीं विधानसभा क्षेत्र ज्वालामुखी में सबसे अधिक 811 मतदाताओं ने मतदान किया जबकि घर से वोट डालने का विकल्प चुनने वाले पात्र मतदाता 837 थे। जयसिंहपुर में 334 में से 325 लोगों ने अभी तक वोट डाला।

सुलह विधानसभा क्षेत्र में 374 मतदाताओं में से 362 से घर से वोट डाला। विधानसभा क्षेत्र नगरोटा में 40 पात्र मतदाताओं में से 39 ने अपने मताधिकार का उपयोग किया। वहीं कांगड़ा विस में 603 में से 589 ने मतदान किया। बात करें शाहपुर की तो यहां 431 पात्र मतदाता थे जिनमें से 418 ने घर से मतदान किया। विधानसभा क्षेत्र धर्मशाला में 514 लोगों ने घर से वोट डाला जबकि पात्र 533 थे। पालमपुर में 737 में से 721 लोगों ने घर से मतदान किया। जबकि विधानसभा क्षेत्र बैजनाथ से घर से मतदान करने का विकल्प चुनने वाले पात्र 594 मतदाताओं में से 576 ने डाक मतपत्र के माध्यम से अभी तक अपना वोट डाला।

जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. निपुण जिंदल ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में घरों से डाक मतपत्रों का उपयोग करके मतदान करने वाले बुजुर्ग और दिव्यांग मतदाताओं ने निर्वाचन और प्रशासन के प्रयासों को सार्थक सिद्ध किया है। उन्होंने बताया कि इसके अलावा भी मतदान केंद्रों में बुजुर्गो व दिव्यांगों की सुविधा के लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि अधिक से अधिक संख्या में अपने घरों से निकल कर मतदान प्रक्रिया में हिस्सा लेकर लोकतंत्र के महापर्व को सफल बनाएं।

आबकारी विभाग की टीम द्वारा आदेशों की अवहेलना करने पर वाइन परिसर सील

शिमला/शैल। राज्य कर एवं आबकारी विभाग के आयुक्त यूनुस ने बताया कि विधानसभा चुनाव के दृष्टिगत पूरे प्रदेश में शराब की बिक्री पर पाबन्दी लगा दी गई है। प्रदेश में स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के दृष्टिगत शराब की आपूर्ति रोकने के लिए विभाग के अधिकारी संदिग्ध गतिविधियों और अन्य परिसरों पर कड़ी नजर रखे हुए हैं। विभाग के सभी समाहर्ता, क्षेत्र प्रभारी, प्रवर्तन प्रभारी एवं जिला नोडल प्रभारी पूरे प्रदेश में शुष्क दिवस (ड्राई डे) के दौरान प्रत्येक लाइसेंस परिसर एवं संदिग्ध स्थानों का निरीक्षण कर रहे हैं। ड्राई डे आदेशों एवं निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जा रही है।

समाहर्ता आबकारी दक्षिण क्षेत्र के नेतृत्व में जिला सोलन की टीम ने सुबाथू में ड्राई डे पर वाइन शॉप खुली रखने पर सख्त कारवाई करते हुए परिसर सील कर दिया है और आगामी कारवाई अमल में लाई जा रही है। आयुक्त ने कहा है कि यदि कोई भी लाईसेंसी किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधियों में संलिप्त पाया जाता है तो उसका लाइसेंस तुरंत प्रभाव से रद्द कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि चुनाव के दौरान 48 घंटे तक शराब की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा।

यूआईडीएआई का 'आधार' संबंधी दस्तावेज अपडेट करने का आग्रह

शिमला/शैल। पिछले दशक के दौरान 'आधार' नंबर भारत के निवासियों की विशिष्ट पहचान के एक प्रमाण पत्र के रूप में उभर कर सामने आया है। लोगों द्वारा 'आधार' नंबर का उपयोग कई सरकारी योजनाओं और सेवाओं का लाभ उठाने के लिए किया जा रहा है।

जिन निवासियों को 10 साल पहले उनका 'आधार' नंबर जारी किया गया था, और जिन्होंने उसके बाद इन वर्षो में इसे कभी भी अपडेट नहीं किया है, इस तरह के आधार नंबर धारकों को अपने-अपने दस्तावेजो को अपडेट करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

कुछ खबरों में यह गलत जानकारी दी गई कि इसे अनिवार्य कर दिया गया है। सभी देशवासियों को इन खबरों और सोशल मीडिया पोस्ट को नजरअंदाज करने के बारे में सूचित किया जाता है।

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) ने पहले एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर यह रेखांकित किया था कि वह देश के निवासियों से अपने-अपने दस्तावेजों को अपडेट करने के लिए आग्रह कर रहा है और उन्हें प्रोत्साहित कर रहा है। हाल ही में जारी राजपत्र अधिसूचना में यह भी स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि देश के निवासी हर 10 साल के पूरा होने पर 'ऐसा कर सकते हैं'।

'आधार' संबंधी दस्तावेजों को निरंतर अपडेट या अद्यतन रखने से लोगों को जीवन यापन में आसानी होती है, सेवाओं को बेहतर ढंग से मुहैया कराना संभव हो पाता है, और इसके साथ ही सटीक प्रमाणीकरण को संभव करने में मदद मिलती है। यूआईडीएआई ने हमेशा देश के निवासियों को अपने-अपने दस्तावेजों को अपडेट करने के लिए प्रोत्साहित किया है, और यह राजपत्र अधिसूचना उसी दिशा में एक और अहम कदम है।

भारत सरकार द्वारा केंद्र सरकार के पेंशनभोगियों के लिए डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू

शिमला/शैल। पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण विभाग, कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, भारत सरकार ने केंद्र सरकार के पेंशनभोगियों के लिए डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है। नवंबर 2021 में, राज्यमंत्री (पीपी) डॉ. जितेंद्र सिंह ने किसी भी एंड्रॉइड मोबाइल फोन के माध्यम से जीवन प्रमाणपत्र जमा करने के लिए फेस ऑथेंटिकेशन तकनीक का शुभारंभ किया था। अब विभाग डिजिटल मोड के माध्यम से जीवन प्रमाणपत्र को बढ़ावा देने के लिए और फेस ऑथेंटिकेशन तकनीक को लोकप्रिय बनाने के लिए विशेष राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू कर रहा है। सभी पंजीकृत पेंशनभोगी संघों, पेंशन संवितरण बैंकों, भारत सरकार के मंत्रालयों और सीजीएचएस वेलनेस केंद्रों को निर्देश दिया गया है कि वे पेंशनभोगियों के 'सुविधापूर्ण जीवन' के लिए, जीवन प्रमाणपत्र जमा करने हेतु डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र/फेस ऑथेंटिकेशन तकनीक को बढ़ावा देने के लिए विशेष शिविरों का आयोजन करें।

इसी क्रम में, दीपक गुप्ता, अवर सचिव, पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण विभाग के नेतृत्व में केंद्र सरकार का एक दल प्रयागराज का दौरा करेगा, जहां 11 नवंबर, 2022 को केंद्र सरकार के पेंशनभोगियों के लिए एस.बी.आई. बमरौली शाखा, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में शिविर आयोजित किया जाएगा। सभी पेंशनभोगी डिजिटल माध्यम से अपने जीवन प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने के लिए केंद्र पर जा सकते हैं।

दिनांक 1.10.2022 से अब तक कुल 29,29,986 डीएलसी जनरेट किए गए, फेस ऑथेंटिकेशन के माध्यम से कुल 1,52,172 डीएलसी जनरेट किए गए। केंद्र सरकार के पेंशनभोगियों के लिए कुल 11,95,594 डीएलसी जनरेट किए गए तथा फेस ऑथेंटिकेशन के माध्यम से कुल 96,099 डीएलसी जनरेट किए गए।

पहले जीवन प्रमाणपत्र व्यक्तिगत रूप से देने के लिए वृद्ध पेंशनभोगियों को बैंकों के बाहर कतारों में घंटों खड़ा होना पड़ता था। अब, यह उनके घर से ही आसानी से एक बटन के क्लिक पर संभव हो गया है। मोबाइल द्वारा फेस ऑथेंटिकेशन के माध्यम से जीवन प्रमाणपत्र जमा करने की प्रक्रिया में, आधार संख्या, ओटीपी के लिए मोबाइल नंबर, पीपीओ नंबर, बैंक/डाकघर के साथ खाता संख्या के ब्यौरे पहली बार आवश्यक हैं। यह सुविधा राज्य सरकार के कर्मचारियों और राज्य के कोषागार कार्यालय के रूप में संवितरण प्राधिकरण के लिए भी उपलब्ध है।

केंद्रीय टीम ने सभी पेंशनभोगियों से आग्रह किया है कि वे डिजिटल माध्यम से अपने जीवन प्रमाण पत्र जमा करने के लिए केंद्र का दौरा करें।

प्रतिभा सिंह ने शांतिपूर्ण मतदान के लिए मतदाताओं का आभार व्यक्त किया

शिमला/शैल। कांग्रेस अध्यक्ष सांसद प्रतिभा सिंह ने प्रदेश में कांग्रेस पार्टी की शानदार जीत का दावा करते हुए शांतिपूर्ण मतदान के लिए मतदाताओं का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है कि देश के संविधान ने भारत के हर नागरिक 18 साल से लोकतंत्र का इस पर्व में भाग लेने व अपनी सरकार चुनने का स्वत्रंत अधिकार दिया है।

प्रतिभा सिंह ने कहा है कि प्रदेश में जनबल की जीत हो रही है और भाजपा के धनबल को लोगों ने पूरी तरह नकार दिया है। उन्होंने कहा है कि प्रदेश के चुनाव परिणाम देश में राजनीति की दशा व दिशा तय करेंगे। उन्होंने कहा कि भारी मतदान सत्ता परिवर्तन को साफ इंगित करता है। मतदान कांग्रेस के पक्ष में हुआ है और 8 दिसम्बर के बाद प्रदेश में पूर्ण बहुमत से कांग्रेस की एक मजबूत सरकार बनेगी प्रदेशहित में जन कल्याण के कार्य व चुनावों में किये अपने सभी वादों को पूरा करेंगी।

आबकारी विभाग ने शराब की 19151 बोतलें जब्त एवं 68145 लीटर कच्ची शराब नष्ट की

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश राज्य कर एवं आबकारी विभाग की टीम ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में कारवाई करते हुए लगभग 19,151 शराब की बोतलें आबकारी नियम के अंतर्गत जब्त की है। आयुक्त यूनुस स्वयं भी प्रदेश के विभिन्न जिलों में जाकर टास्क फोर्स के साथ अवैध शराब के ख़िलाफ़ अभियान में कारवाई कर रहे हैं।

आयुक्त ने बताया कि विधानसभा चुनावों के दृष्टिगत विभाग ने अपनी गतिविधियां बढ़ा दी है। सभी गठित टीमें निरंतर अपने अपने क्षेत्रों में अवैध शराब के खिलाफ सख्त कारवाई कर रही है टास्क फोर्स ने पिछले 24 घंटों में जिला सिरमौर में पांवटा साहिब तहसील के खारा के जंगलों में छापेमारी कारवाई करते हुए लगभग 48,300 लीटर कच्ची शराब को आबकारी अधिनियम के अंतर्गत नष्ट किया। टास्क फोर्स ने शराब की दो भटियों एवं अन्य उपकरणों को नष्ट किया। इस सम्पूर्ण कारवाई की वीडियोग्राफी भी की गई है।

आयुक्त ने बताया कि नूरपुर के पंजाब की सीमा से सटे इलाकों में राज्य आबकारी विभाग पंजाब आबकारी विभाग के अधिकारियो एवं पुलिस के सहयोग से रणनीति बना कर इंदौरा क्षेत्र में संयुक्त कारवाई करते हुए लगभग 18000 लीटर कच्ची शराब आबकारी अधिनियम के अंतर्गत कब्जे में लेकर नियमानुसार मौके पर नष्ट किया। कच्ची शराब बनाने वालों ने जमीन के नीचे गडडे बनाकर ड्रमों एवं प्लास्टिक के तिरपालों में यह शराब छिपा कर रखी थी। इसके अतिरिक्त 125 लीटर लाहन कब्जे में लेकर संलिप्त व्यक्तियों के खिलाफ पुलिस थाना में एफ.आई.आर. भी दर्ज की है। इस कारवाई में दोनों राज्यों के लगभग 50 विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

उन्होंने कहा कि जिला बिलासपुर में भी टास्क फोर्स ने पंजाब के सीमावर्ती गांव मजारी में अवैध शराब के खिलाफ कार्यवाही करते हुए शराब की भटियों एवं अन्य उपकरणों सहित लगभग 1600 लीटर कच्ची शराब आबकारी अधिनियम के तहत नष्ट की गई।

इसके अतिरिक्त प्रवर्तन जोन दक्षिण क्षेत्र की टीम ने जिला शिमला के चीनी बंगला, नारकंडा, एवं संधू में खुदरा बिक्री के परिसरों का निरीक्षण कर नियमों की अवहेलना पर लगभग 3161 लीटर शराब जब्त की।

नेहरू युवा केंद्र संगठन के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित

शिमला/शैल। नेहरू युवा केंद्र शिमला के द्वारा आदर्श युवा मण्डल सैव, ग्राम पंचायत नालदेहरा मे नेहरू

युवा केंद्र संगठन के 50वें स्थापना दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला नीन मे आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता युवा मण्डल के प्रधान कपिल गांधी द्वारा की गयी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत खेल कूद गतिविधियों का आयोजन किया गया जिसमे की कबड्डी, रस्साकस्सी, बोरी दौड़ का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम मे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम जिसमे पहाड़ी नाटी, पंजाबी नृत्य, भाषण, एकल गान, समूह गान, आदि का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में तकरीबन 150 प्रतिभागी (विद्यालय तथा युवा मण्डल सदस्यों) ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन समारोह मे पाठशाला के प्रधानाचार्य पी.के सोनी एवं युवा मण्डल प्रधान कपिल गांधी द्वारा विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

नेहरू युवा केंद्र, शिमला की जिला युवा अधिकारी मनीषा शर्मा ने बताया कि इसके अतिरिक्त राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला ओखरू एवं ग्राम समन्वय युवा मण्डल ओखरू द्वारा स्थापना दिवस के अंतर्गत स्वैच्छिक कार्यवाही के माध्यम से सेवा एवं सशक्तिकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य पुष्पेंदर सिंह व नेहरू युवा केंद्र के राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवी नितेश कुमार द्वारा की गयी।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत भाषण प्रतियोगिता, समूह नृत्य एवं समूह गान इत्यादि गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम मे तकरीबन 80 लोगो ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत मे विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। नेहरू युवा केंद्र के राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवी नितेश कुमार ने नेहरू युवा केंद्र संगठन की 50 वी वर्षगांठ की बधाई दी।

कम उम्र से ही फिटनेस की आदत डालनी चाहिए:पीवी सिंधु

शिमला/शैल। फिट इंडिया स्कूल सप्ताह की पहल बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि बहुत कम उम्र से ही फिटनेस की आदत डालनी चाहिए। मुझे लगता है कि सभी स्कूलों को इस राष्ट्रव्यापी पहल का हिस्सा होना चाहिए और छात्रों को एक स्वस्थ जीवन के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। मैं शुभंकर तूफ़ान और तूफ़ानी का शुभारंभ करते हुए बहुत रोमांचित हूँ, जो इस कार्यक्रम को और भी मज़ेदार और रोमांचक बनाने का वादा करते हैं।'

ओलंपिक में दो बार की पदक विजेता पीवी सिंधु ने वर्ष 2022 के लिए फिट इंडिया अभियान के फिट इंडिया स्कूल सप्ताह पहल के शुभंकर तूफान और तूफानी के शुभारंभ के दौरान उक्त बातें कही।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2019 में फिट इंडिया अभियान को लॉन्च किया था और इसी वर्ष दिसंबर में अभियान के वार्षिक कार्यक्रम, 'फिट इंडिया स्कूल सप्ताह' की शुरुआत हुई थी, जो स्कूलों में फिटनेस की आदतों को विकसित करने तथा छात्रों के बीच फिटनेस और खेल के प्रति

*** चौथा फिट इंडिया स्कूल सप्ताह 15 नवंबर 2022 से शुरू होगा**

*** एक महीने के दौरान भारत भर के विभिन्न स्कूल 4 से 6 दिनों तक फिटनेस और खेल का विभिन्न रूपों में आयोजन करेंगे**

जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित है।

पिछले तीन कार्यक्रम, छात्रों के बीच बहुत सफल रहे हैं। इस पहल को युवा पीढ़ी के बीच और अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए, इस बार इस प्रमुख कार्यक्रम में 'तूफान और तूफानी' नाम के दो शुभंकरों को जोड़ा गया है, जिसमें दोनों भारत के सबसे योग्य सुपरहीरो और सुपरवुमन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शुभंकरों के खेलों से अधिक जुड़ाव के लिए, उन्हें हवा के रूप में तेज दौड़ने (एथलेटिक्स), कार उठाने (भारोत्तोलन) और ध्यान केन्द्रित करने के कौशल (शतरंज) जैसी महाशक्तियां दी गई हैं। वे खेल और फिटनेस के बारे में विभिन्न कहानियां सुनाकर लोगों के साथ जुड़ते हैं और इस तरह उन्हें प्रेरित, शिक्षित और प्रोत्साहित करते हैं।

चौथा फिट इंडिया स्कूल सप्ताह 15 नवंबर 2022 को शुरू होगा, जिसमें एक महीने के दौरान भारत भर के विभिन्न स्कूल 4 से 6 दिनों के लिए विभिन्न रूपों में फिटनेस और खेल समारोह आयोजित करेंगे और शिक्षक – छात्र समुदाय के बीच इसके महत्व की पुष्टि करेंगे।

फिट इंडिया स्कूल सप्ताह के दौरान स्कूलों में आयोजन के लिए प्रोत्साहित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में शामिल हैं – वार्षिक खेल दिवस, जहां उन्हें अपने छात्रों के बीच असाधारण खेल प्रतिभा की पहचान करने और प्रतिभा पहचान के तहत फिट इंडिया पोर्टल पर ऐसे विवरण प्रदान करने की आवश्यकता होती है(निबंध लेखन, वाद – विवाद, प्रश्नोत्तरी, पोस्टर तैयार करने की प्रतियोगिता (विषय – फिटनेस का महत्व(स्वदेशी खेलों से जुड़ी विभिन्न गतिविधियाँ(छात्रों का खेलो इंडिया शारीरिक स्वास्थ्य मूल्यांकन तथा योग और ध्यान आदि।

विधिक साक्षरता शिविर के माध्यम से विद्यार्थियों को दी कानूनों की जानकारी

शिमला/शैल। राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस के उपलक्ष्य पर धर्मशाला के दाड़ी में स्थित औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में विद्यार्थियों के लिए विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। जिला कांगड़ा विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित इस शिविर की अध्यक्षता करते हुए सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण विजय लक्ष्मी ने छात्रों को महत्वपूर्ण कानूनों की जानकारी देकर जागरूक किया। उन्होंने साक्षरता शिविर में उपस्थित छात्रों को राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस के महत्व तथा यह दिवस क्यों मनाया जाता है, इसके बारे में बताया।

उन्होंने बच्चों को पोक्सो एक्ट, निशुल्क कानूनी सहायता, राष्ट्रीय लोक अदालत, मध्यस्थता, अपराध से पीड़ित व्यक्ति प्रतिकर स्कीम, 2019 तथा नालसा (नशा पीड़ितों को विधिक सेवाऐं एवं नशा उन्मूलन के लिए विधिक सेवाऐं) स्कीम 2015 के बारे में विस्तार से बताया। वहीं अधिवक्ता विश्व कीर्ति पराशर ने छात्रों को मोटर व्हीकल एक्ट तथा उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के बारे में जानकारी दी।

इस दौरान विधिक साक्षरता शिविर के साथ – साथ औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान दाड़ी में विधिक सेवा संस्थानों द्वारा किये जाने वाले कार्य, उनके द्वारा दी जाने वाली सेवाएं तथा उपलब्धियों से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177 – 2805015, 94180 – 15015 फैक्स: 2805015

यदि डबल इंजन सरकार लाभदायक है तो इन सवालों के जवाब क्या हैं?

2019 में स्कूलों में वर्दियां क्यों नहीं मिल पायी।
तीन वर्ष कुछ योजनाओं में केन्द्र से कोई भी सहायता अनुदान क्यों नहीं मिल पाया?
जीएसटी में 544.82 करोड़ की क्षतिपूर्ति क्यों नहीं मिल पायी?
तीन वर्षों में बजट अनुमानों से वास्तविक खर्च 72826 करोड़ कैसे बढ़ गया?
क्या बढ़े हुये खर्च के लिये धन कर्ज लेकर जुटाया गया।

शिमला/शैल। प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिये भाजपा, कांग्रेस और आप तथा निर्दलीयों तक के घोषणा पत्र आ चुके हैं। सभी ने मतदाताओं से लम्बे चौड़े वादे कर रखे हैं। लेकिन किसी ने भी प्रदेश की वित्तीय स्थिति पर कुछ नहीं कहा है। वादे पूरे करने के लिये धन कहां से आयेगा उस पर सब खमोश हैं। 2014 में जब केन्द्र में भाजपा की सरकार बनी तब से लेकर आज तक यह स्पष्ट हो चुका है कि यह सरकार सरकारी क्षेत्र की जगह प्राइवेट क्षेत्र को ज्यादा अधिमान दे रही है। इसी के चलते सारे सार्वजनिक उपक्रम योजनाबद्ध तरीके से प्राइवेट सैक्टर के हवाले किये जा रहे हैं। यहां तक कि इन्हें कारोबार के लिये पूंजी भी सरकारी क्षेत्र से ही उपलब्ध करवाई जा रही है। प्राइवेट क्षेत्र को इस तरह से अधिमान दिये जाने का अर्थ है कि सरकारी क्षेत्र को योजनाबद्ध तरीके से कमजोर करना। इस कमजोर करने के प्रयास का परिणाम होता है महंगाई और बेरोजगारी। लेकिन इस तथ्य से लोग सीधे अवगत ही नहीं हो पाये हैं। इसलिए उनका ध्यान बांटने के लिये सभी भावनात्मक मुद्दे उनके सामने परोसे जाते हैं। आज हिमाचल के चुनाव में भी डबल इंजन की सरकार का तर्क दिया जा रहा है। केन्द्र में 2014 से प्रदेश में 2017 से भाजपा की सरकारें हैं। केन्द्र और राज्य दोनों जगह एक ही पार्टी की सरकारें होना प्रदेश के विकास के लिये अच्छा होता है। लेकिन क्या हिमाचल के संद्धर्भ में ऐसा हो पाया है? क्या हिमाचल को कोई अतिरिक्त सहायता मिल पायी है? या हिमाचल को उसका अपना जायज हिस्सा भी नहीं मिल पाया है और प्रदेश का नेतृत्व डबल इंजन के कारण आवाज भी नहीं उठा पाया है? इन सवालों की पड़ताल करने के लिये सीएजी रिपोर्ट से ज्यादा प्रमाणिक दस्तावेज और कोई नहीं हो सकता। जयराम सरकार ने दिसम्बर 2017 को पदभार संभाला था। इस सरकार के आने के बाद 31 मार्च 2019 को कैग की पहली रिपोर्ट आयी और इसके मुताबिक यह सरकार सौ योजनाओं पर एक नया पैसा भी खर्च नहीं कर पायी है। रिपोर्ट आने पर यह प्रमुखता से छपा था लेकिन इसका जवाब आज तक नहीं आ पाया है। इस रिपोर्ट में जीएसटी को लेकर यह दर्ज है कि प्रदेश को जो क्षतिपूर्ति केन्द्र द्वारा की जानी थी उसमें 544.82 करोड रुपए केन्द्र से नहीं मिल पाया है। जुलाई 2017 में प्रदेश में जीएसटी लागू हो गया था और एक्ट के मुताबिक राज्य को होने वाले घाटे की भरपाई केन्द्र को करनी थी जो नहीं हो पायी। इसके बाद 31 मार्च 2020 को अगली के रिपोर्ट आयी है। 2019 में सरकार स्कूलों में बच्चों को वर्दियां नहीं दे पायी है। ऐसा क्यों हुआ है इसके कारणों का खुलासा आज तक नहीं हो पाया है। 31 मार्च 2020 को आयी इस रिपोर्ट के दूसरे पन्ने पर भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान की तालिका छपी है। इसके मुताबिक 2017 – 18 और 19 – 20 के 3 वर्षों में कुछ योजनाओं में केन्द्र कोई अनुदान नहीं मिला है। इसी रिपोर्ट के पहले पन्ने पर सरकार के बजट और व्यय के आंकड़े छपे हैं। इन आंकड़ों के मुताबिक इन्हीं तीन वर्षों में सरकार के बजट अनुमानों से उसका खर्च 72,826 करोड बढ़ गया है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वभाविक हो जाता है कि इस बढ़े हुये खर्च के लिये धन का प्रावधान कैसे किया गया क्या सरकार के पास कर्ज लेने के अतिरिक्त और कोई विकल्प उपलब्ध था इन सवालों का जवाब सत्ता पक्ष की ओर से आज तक नहीं आया है। इसलिए यह दस्तावेजी साक्ष्य पाठकों के सामने रखे जा रहे हैं। इन साक्ष्यों से यह आशंका बनी हुई है कि प्रदेश का कर्ज भार कहीं एक लाख करोड से तो नहीं बढ़ गया है। फिर अब तो प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना भी बन्द हो चुकी है और इसमें भी 203 सड़कें अधूरी हैं। क्या यही डबल इंजन सरकार के लाभ हैं।

तालिका-1.1: 2015-20 के दौरान राज्य सरकार का बजट एवं व्यय

(₹ करोड़ में)

विवरण	2015-16		2016-17		2017-18		2018-19		2019-20	
	बजट अनुमान	वास्तविक	बजट अनुमान	वास्तविक	बजट अनुमान	वास्तविक	बजट अनुमान	वास्तविक	बजट अनुमान	वास्तविक
राजस्व व्यय										
सामान्य सेवाएं	9,207	8,788	10,135	9,728	11,230	11,009	13,331	11,438	14,351	12,335
सामाजिक सेवाएं	9,676	7,980	11,388	9,610	11,884	10,337	13,488	11,482	13,895	12,047
आर्थिक सेवाएं	6,407	5,525	7,314	5,996	7,734	5,697	9,082	6,512	7,832	6,338
अन्य	5	10	5	10	9	10	11	10	11	10
योग (1)	25,295	22,303	28,842	25,344	30,857	27,053	35,912	29,442	36,089	30,730
पूंजीगत व्यय										
पूंजीगत परिव्यय	2,991	2,864	3,241	3,499	3,531	3,756	4,298	4,583	4,580	5,174
संवितरित ऋण एवं अग्रिम	397	463	428	3,290	448	503	448	468	457	458
लोक ऋण की अदायगी	1,503	3,948	2,229	3,943	3,105	3,500	3,184	4,673	3,262	6,701
लोक लेखा संवितरण	2,978	10,577	3,103	12,351	3,303	13,043	3,303	14,493	3,303	20,111
अंत रोकड़ शेष	--	216	--	316	--	183	--	53	--	1,060
योग (2)	7,869	18,068	9,001	23,399	10,387	20,985	11,233	24,270	11,602	33,504
सकल योग	33,164	40,371	37,843	48,743	41,244	48,038	47,145	53,712	47,691	64,234

स्रोत: राज्य सरकार के वार्षिक वित्तीय विवरण तथा वित्त लेखे।

तालिका-1.2: भारत सरकार से प्राप्त सहायता अनुदान

(₹ करोड़ में)

विवरण	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19	2019-20
गैर-योजनागत अनुदान	8,524	8,877	--	--	--
राज्य योजना स्कीमों हेतु अनुदान	756	1,188	--	--	--
केन्द्रीय योजना स्कीमों हेतु अनुदान	38	44	--	--	--
केन्द्रीय प्रायोजित स्कीमों हेतु अनुदान	1,978	3,055	--	--	--
केन्द्रीय प्रायोजित स्कीमें	--	--	3,590	4,010	4,915
वित्त आयोग के अनुदान*	--	--	8,889	8,831	8,618
अन्य अंतरण / राज्य/विधायिका युक्त केंद्र शासित प्रदेश को अनुदान	--	--	615	2,276	2,406
योग	11,296	13,164	13,094	15,117	15,939
विगत वर्ष के सापेक्ष वृद्धि/कमी की प्रतिशतता	57.37	16.54	(-) 0.53	15.45	5.44

स्रोत: सम्बंधित वर्षों के वित्त लेखे।

Table 1.8: Month-wise (April 2018 to March 2019) impact of GST and compensation received

(₹ in crore)

Month	Monthly revenue to be protected*	Pre-GST taxes collected**	SGST collected	Provisional apportion-ment of IGST	Total amount received	Compensation received	Surplus (+)/ Deficit (-)
	1	2	3	4	5=(2+3+4)	6	7={1-(5+6)}
April-18	449	2.19	134.88	100.02	237.09	--	211.91
May-18	449	2.18	117.30	117.63	237.11	184	27.89
June-18	449	2.27	127.98	120.38	250.63	336	-137.63
July-18	449	1.68	130.74	108.30	240.72	225	-16.72
August-18	449	2.45	121.64	103.99	228.08	--	220.92
September-18	449	1.78	117.38	102.99	222.15	354	-127.15
October-18	449	1.50	124.54	94.86	220.90	--	228.10
November-18	449	0.57	142.58	124.64	267.79	315	-133.79
December-18	449	1.65	139.43	115.79	256.87	--	192.13
January-19	449	2.00	142.96	104.64	249.60	330	-130.60
February-19	449	2.45	132.58	100.18	235.21	--	213.79
March-19	449	2.02	158.94	91.05	252.01	293	-96.01
	--	--	-91.98#	--	-91.98	--	91.98
Total	5388	22.74	1498.97	1284.47	2806.18	2037	544.82

क्या आप इस चुनाव में अपने को प्रमाणित कर पायेगी

शिमला/शैल। देश के दो राज्यों दिल्ली और पंजाब में आप की सरकारें हैं। इन्हीं सरकारों के दम पर आप ने हिमाचल में भी चुनाव लड़ने का दम भरा और 67 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे। पंजाब में सरकार बनने के बाद जिस जोश और उम्मीद के साथ आप ने प्रदेश में कदम रखा था वह चुनाव के अन्त तक बना नहीं रह सका है। बल्कि अन्त तक आते – आते यह सवाल अहम हो गया कि आप प्रदेश में इतना वोट शेयर ले पायेगी जिसके सहारे वह राष्ट्रीय पार्टी के रूप में मान्यता प्राप्त कर पाये। आप को लेकर यह चर्चा उठाना इसलिये आवश्यक हो जाता है क्योंकि आप भी अन्ना आन्दोलन की कोख से निकली है। आप के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविन्द केजरीवाल और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कार्यशैली एक जैसी ही है। दोनों नेता मीडिया के सहारे ज्यादा प्रचारित हैं जबकि जमीनी हकीकत वास्तविकता से बहुत दूर है। आज पंजाब में आम आदमी पार्टी को बिजली की दरों में बढ़ौतरी करनी पड़ी है और इस बढ़ौतरी पर हिमाचल तक में तीव्र प्रतिक्रिया हुई है। आम आदमी में आप की मुफ्ती योजनाओं को लेकर एक समय जो सवाल उठे थे उनका सच इस बढ़ौतरी से सामने आ गया है। इन्ही चुनावों में कजरीवाल ने करंसी नोटों पर लक्ष्मी और गणेश के चित्र छापने का हिन्दु कार्ड प्ले करने का प्रयास किया और उस पर सवाल उठे। इसी हिन्दु कार्ड के नाम पर आप विलकिस बानो प्रकरण पर मौन रही। इन्हीं कारणों से आप पर संघ प्रायोजित भाजपा की बी टीम होने के आरोप लगते आ रहे हैं।

हिमाचल में आप की परफॉरमैन्स नहीं के बराबर मानी जा रही है। लेकिन आप को पंजाब और दिल्ली में इसकी सरकारें होने से आसानी से राइट ऑफ भी नहीं किया जा सकता है। यह माना जा रहा है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में भी आप अपरोक्ष में भाजपा की सहायक सिद्ध होगी जैसा कि इस चुनाव में हुआ है। भाजपा की अपरोक्ष सहायक होने के कारण ही आप अभी तक विपक्षी एकता का हिस्सा नहीं बन पा रही है। आप के इस राजनीतिक चरित्र के परिदृश्य में यह सवाल उठाये जाने आवश्यक हो जाते हैं कि हिमाचल में जिन तेवरों के साथ आप ने प्रदेश में कदम रखा था उसको अन्त तक निभाया क्यों नहीं गया? क्या आम आदमी का दम भरने वाली आप भी भाजपा या कांग्रेस में सेन्धमारी करके वहां से कोई बड़े नाम इम्पोर्ट करके आगे बढ़ना चाहती है। आज हिमाचल के संद्धर्भ में आप से जुड़े कार्यकर्ताओं को अपने नेतृत्व से यह सवाल पूछना आवश्यक हो जाता है कि प्रदेश को लेकर उनकी नीयत क्या है क्योंकि 2024 के चुनावों के परिदृश्य में यह महत्वपूर्ण हो जाता है